पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिले संस्कार www.matrivandana.org

मातृवन्दना

श्रावण-भाद्रपद, कलियुगाब्द 5118, अगस्त, 2016

खण्डित भारत फिर होगा

अखण्ड

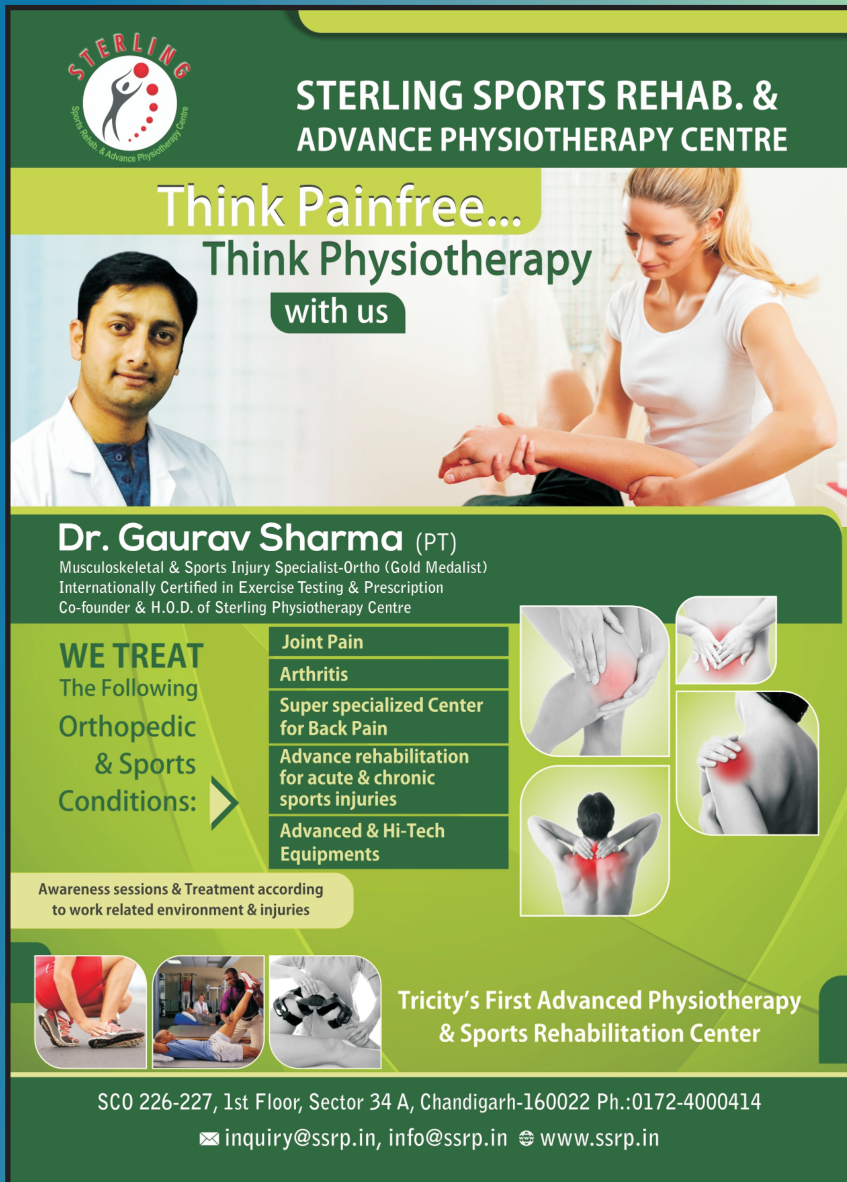
STERLING Sports Rehab. & Advance Physiotherapy Centre
STERLING SPORTS REHAB. &
ADVANCE PHYSIOTHERAPY CENTRE
Think Painfree...
Think Physiotherapy
with us
Dr. Gaurav Sharma (PT)
Musculoskeletal & Sports Injury Specialist-Ortho (Gold Medalist)
Internationally Certified in Exercise Testing & Prescription
Co-founder & H.O.D. of Sterling Physiotherapy Centre
WE TREAT
The Following
Orthopedic
& Sports
Conditions:
Joint Pain
Arthritis
Super specialized Center for Back Pain
Advance rehabilitation for acute & chronic sports injuries
Advanced & Hi-Tech Equipments
Awareness sessions & Treatment according to work related environment & injuries
Tricity's First Advanced Physiotherapy & Sports Rehabilitation Center
SCO 226-227, 1st Floor, Sector 34 A, Chandigarh-160022 Ph.:0172-4000414
inquiry@ssrp.in, info@ssrp.in www.ssrp.in

Global Printlink
Graphics Pvt.Ltd.
More refreshing in 3D
GET CLOSER TO COLD FRIEND
Indoor & Outdoor Branding
Customized Wall Decor
Corporate Gifts
Pelimac
English Educational Services
Designing, Branding, Printing & Packaging
WE CAN PRINT
Wall Vinyl
Glass Film
Wall Covering
Cloth Banners
Artistic Canvas
Banners & Posters
Frontlits & Backlits
Printing on Leathrite
...and many more
Fastest & High Quality Printing in Tricity
HP Latex 360
for more details Call:
9041 444 799 | 0172-4664799
SCO 226-227, 1st Floor, Sector 34 A, Chandigarh - 160 022
E-mail: globalprintlink34@gmail.com

आसिन्धो सिन्धुपर्यन्ता यस्य भारतभूमिका।
पितृभूः पुण्यभूश्चैव स वै हिन्दुरिति स्मृतः॥

सिन्धु नदी के उद्गम स्थान से लेकर सिन्धु सागर (हिन्द महासागर) तक सम्पूर्ण भारत भूमि जिसकी पितृभू (मातृ-पितृ भूमि) तथा पुण्यभूमि है, वह हिन्दू कहलाता है।

- अथर्ववेद

वर्ष : 16 अंक : 8

मातृवन्दना

श्रावण-भाद्रपद, कलियुगाब्द 5118, अगस्त, 2016

सम्पादक
डॉ. दयानन्द शर्मा

सम्पादक मण्डल
दलेल सिंह ठाकुर

प्रबन्धक
महीधर प्रसाद

वार्षिक शुल्क
100 रुपये

कार्यालय
मातृवन्दना
डॉ. हेडगेवार भवन,
नाभा हाउस
शिमला-171 004
दूरभाष : 0177-2836990
e-mail:
www.matrivandana.org
matrivandanashimla@gmail.com

प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, PI-820, फेस-2, उद्योग क्षेत्र, चण्डीगढ़ से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाउस, शिमला-171004 से प्रकाशित।
सम्पादकः डॉ. दयानंद शर्मा।

वैधानिक सूचना : पत्रिका में छपी सामग्री से सम्पादक का सहमत होना जरूरी नहीं। इस सम्बन्ध में किसी भी कार्यवाही का निपटारा शिमला न्यायालय में ही होगा।

जम्मू-कश्मीर है भारत का अभिन्न अंग

अलगाववादी ताकतें धर्म का वास्ता देकर कश्मीरी अवाम को अलगाववाद की ओर धकेल रही हैं। अंदरूनी सरकारी भ्रष्टतंत्र, पुलिसवालों की सख्ती, बेरोजगारी, उद्योग एवं विकास की कमी तथा सुरक्षा बलों के प्रति रोष से वहां का सामान्य वर्ग भी इन उग्र अलगाववादियों के समक्ष झुकता हुआ सा प्रतीत हो रहा है। यही कारण है कि जब कोई अलगाववादी या आतंकवादी सरगना सुरक्षा बलों द्वारा पकड़ा या मारा जाता है तो कश्मीर अचानक अशान्त हो जाता है

सम्पादकीय	जम्मू-कश्मीर है भारत का अभिन्न अंग	3
प्रेरक प्रसंग	कर्मों का फल	4
चिंतन	जप और माला	5
आवरण	राष्ट्र के रूप में भारत	6
संगठनम्	हम अपनी भूमिका तय करें	10
पुण्य जयंती	मारवाड़ का रक्षक	12
देश-प्रदेश	गंगा को निर्मल बनाने के लिए उत्तराखंड में	13
देवभूमि	हिमाचल की लेखिका नंदिता को	15
पुण्य स्मरण	स्वयं के प्रति कठोर व अनुशासन	16
घूमती कलम	हनुमान मंदिर बचाने साथ आए	17
काव्य जगत	नासमझ दिन में भी सोता रहा	20
स्वास्थ्य	खाद्य एवं पेय पदार्थों में	21
प्रतिक्रिया	धर्मांधता के प्रचारक	22
विविध	भारत माता की जय	23
कृषि	बजौरा के दो वैज्ञानिकों ने तैयार की नई	24
महिला जगत	वीरांगना तीलू	26
दृष्टि	वियतनाम में शिवाजी महाराज की प्रेरणा	27
विश्वदर्शन	महाभारत कालीन इस देश में बचे	28
समसामयिकी	समाज को असंस्कृत कर रहे हैं	29
बाल जगत	अन्याय या न्याय	31

पाठकों के पत्र

महोदय,

मातृवन्दना मई, 2016 का अंक 'राष्ट्र हित सर्वोपरि' विषय पर केन्द्रित था। आवरण के लेख राष्ट्रवादी विचारधारा से ओत-प्रोत थे। इतिहास की ओर मुड़कर देखें तो अंग्रेजों ने सन् 1857 की क्रांति के पश्चात् प्रमुख हिन्दू समाज को और उसके अखण्ड भारत के विचार को कमजोर करने के लिए मुसलमानों को हिन्दुओं के विरूद्ध भड़काना शुरू किया था। परिणामस्वरूप धर्म के आधार पर देश का बंटवारा हुआ। आजादी के बाद भी अंग्रेजी मानसिकता बदली नहीं। भाषाई राज्यों की स्थापना के कारण चोर दरवाजे से अंग्रेजीयत दिन प्रतिदिन फल-फूल रही है। धन एवं राज्य सत्ता के लालच के लिए वोट बैंक की राजनीति के कारण आतंकवाद, आरक्षण, नक्सलवाद पनप रहे हैं। इन वृत्तियों के कारण स्वहित सर्वोपरि हो गया है। अंग्रेजी एवं इस्लामिक धार्मिक शैक्षिक संस्थाओं के कारण संस्कार विहीन समाज की उत्पत्ति हो रही है। सर्वोपरि राष्ट्रहित के लिए भारतीय संविधान की पुनः संचरना आवश्यक है। अब राष्ट्र विरोधी संवैधानिक प्रावधानों को समाप्त करना समय की मांग हो चुकी है।

प्रभुलाल, रामपुर

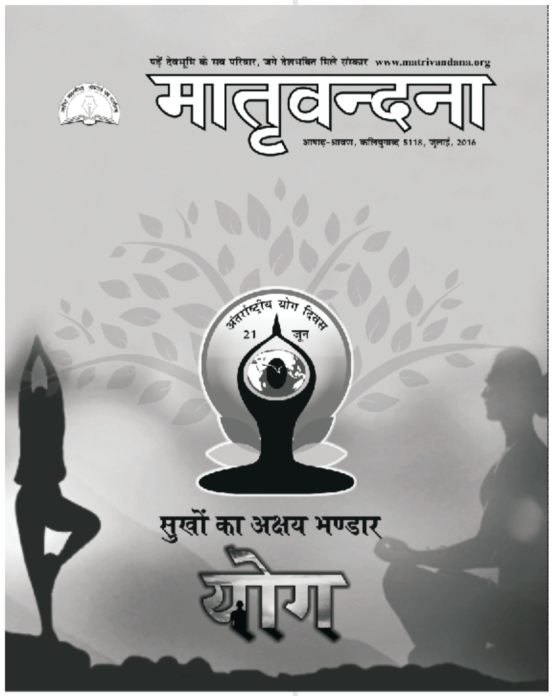

महोदय

विगत जून माह के अंक में प्रेरक प्रसंग सचमुच भा गया। सुकरात का आत्म तत्वज्ञान श्रेष्ठ है। कमोवेश गुरु नानक ने भी कुछ ऐसे कहा- ''कौन मुआ रे कौन मुआ? ब्रह्म ज्ञानी मिल करो विचारा ए तो चलत भया। जो ए दीखे सो ए नाहीं, ज्ञाननहारे को बली जाईये''। भगवान श्रीकृष्ण ने कहा था, ''अन्तवन्त इमे देहा, नित्यस्योक्ता शरीरिणः।।'' आदि शंकराचार्य ने कहा, ''ना अहम् जातोन प्रबुद्धो, न नष्टो, देहस्योक्ताः प्राकृताः सर्वधर्माः।...'' ''अमर आत्मा है, विनाशी है काया'', कहा दाराशिकोह ने, जब उसके पिता ने मृत्युदण्ड का भय दिखाया। ''जिस्म खाक में मिल जाएगा मगर रूह सदा से है, हमेशा रहेगी।'' प्रेरक प्रसंग पाठकों में चिन्तन अनुचिन्तन की जागृति और जागृति की ज्वाला प्रज्वलित करते रहेंगे।

मेजर रामनाथ शर्मा, हमीरपुर

सभी सुधी पाठकों व विज्ञापनदाताओं को स्वतंत्रता दिवस, रक्षा बंधन तथा श्रीकृष्ण जन्माष्टमी की हार्दिक शुभकामनाएं

सुझाव व शिकायत हेतु सम्पर्क करें:- 0177-2836990

स्मरणीय दिवस (अगस्त)

गोस्वामी तुलसीदास जयंती	*10 अगस्त*
एकादशी	*14, 28 अगस्त*
स्वतन्त्रता दिवस	*15 अगस्त*
रक्षा बन्धन	*18 अगस्त*
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	*25 अगस्त*

जम्मू-कश्मीर है भारत का अभिन्न अंग

पम्पोर की दहशतगर्द घटना को बीते दो दिन ही हुए थे कि बड़े सुपुत्र का दिल्ली से फोन आया कि मेरा कुछ दिनों का अवकाश स्वीकृत हुआ है, बच्चों की छुट्टियां भी खत्म हो रही हैं, आप माता जी के साथ दिल्ली आ जाइये। हम सब श्रीनगर जा रहे हैं। वापसी में वैष्णो देवी के भी दर्शन करेंगे। भारत का स्वर्ग कहे जाने वाले कश्मीर को देखने की बहुत पहले से चाह थी, वह इसलिए भी कि हमारे पूर्वजों का मूल जन्म स्थान कश्मीर रहा है। यह सुअवसर मिला तो बड़ी प्रसन्नता हुई किन्तु भीतर कहीं एक संदेह भी था कि अशान्त कश्मीर में कभी कहीं पर भी आतंकवादी घटना घट सकती है। पूर्वजों के मूल स्थान को देखने की उत्कण्ठा ने संदेह पर विजय प्राप्त कर ली। मैं और मेरी धर्मपत्नी दूसरे दिन दिल्ली पहुंचे और अगले दिन हवाई मार्ग से डेढ़ घण्टे में सपरिवार श्रीनगर पहुंच गए। वाह! कश्मीर घाटी! सचमुच में जन्नत है। यह समतल, सीधी जमीन चारों और हरियाली ही हरियाली, निर्मल जल वाली डल झील, उसमें दुल्हन की तरह सजे शिकारे (छोटी नावें) डूबते सूरज की रोशनी में रंग बदलता झील का पानी, सेब के बाग-बगीचे, धान से हरे-भरे खेत, पहलगाम की ओर जाते हुए दूर-दूर तक फैले वे सीधे समतल खेत जिनमें केवल केसर ही उगता है। पहलगाम की ऊंची चोटियों पर अश्वारोहण करते हुए पहुंचना जहां सीधे समतल हरे मैदान आपको सम्मोहित कर देते हैं। अनंतनाग से अमरनाथ की अनुपम एवं असीम भक्तिपूर्ण यात्रा। गुलमर्ग की तो छटा ही निराली है। श्रीनगर से सीधे समतल राजमार्ग से टैक्सी-कार में डेढ़ घण्टे में गुलमर्ग पहुंच जाईए और गण्डोला (रोपवे) से 20 मिनट में बर्फ से भरे श्वेत उत्तुंग शिखर पर हिम-क्रीडा का आनंद उठाइए। प्रकृति ने क्या कुछ नहीं दिया कश्मीर को।

तीन दिनों में कश्मीर का भ्रमण किया कहीं कोई उपद्रव नहीं हुआ। सर्वत्र शांत वातावरण था। हां, मुख्यस्थानों और राजमार्गों पर सुरक्षा बलों की मौजूदगी और सजगता भी सामान्य स्थिति का मुख्य कारण मानी जा सकती है। यह देखकर हम हैरान थे कि हजारों पर्यटक सपरिवार पहले से ही यहां अनुपम दृश्यों का आनन्द उठा रहे हैं। मैं इस बात से भी हतप्रभ था कि कश्मीर के सभी व्यक्ति जिनसे हमारा सरोकार था, चाहे वे होटल के प्रबन्धक या कर्मचारी, गाईड, शिकारे वाले, दुकानदार, रैस्टोरैंट के कर्मचारी, टैक्सी ड्राईवर, घोड़े वाले या अन्य जिन लोगों से हमारा परिचय हुआ था, ये सभी लोग व्यवहार में अत्यन्त शालीन, विनम्र, खिदमतगार और सज्जन प्रतीत हुए। ये सभी मुस्लिम थे, ये कहने में गुरेज नहीं। मन में विचार आया कि आत्म निर्भरता, आजीविका एवं व्यापार की वृद्धि हेतु यदि बाहर से आए लोगों के साथ सामान्य एवं सद्भाव पूर्ण व्यवहार अपेक्षित है तो क्या कारण है कि अधिकांश लोग अलगाववादी नेताओं और पाकिस्तानी सत्ताधारियों के बहकावे में आकर स्वयं अपने पांवों पर कुल्हाड़ी मार रहे हैं।

अतीत में कश्मीर भारतीय संस्कृति एवं दर्शन का मुख्य केंद्र था। देवभाषा संस्कृत के काव्य शास्त्र का विकास यहां हुआ। पिप्पलाद ऋषि के साथ सात उच्च कोटि के विद्वानों की एक वर्ष की यहां हुई आध्यात्मिक चर्चा ने ब्रह्म और ब्रह्माण्ड के रहस्यमय ज्ञान को प्रश्नोपनिषद् के माध्यम से संसार के समक्ष प्रस्तुत किया। कश्मीर के आचार्य अभिनव गुप्त ने प्रत्यभिज्ञा दर्शन को पुनर्जन्म दिया। कल्हण-विल्हण जैसे उच्चकोटि के कवि साहित्यकार यहां उत्पन्न हुए। किन्तु आज बड़े दुर्भाग्य की बात है कि विगत ऐतिहासिक भूलों के कारण परतन्त्रता एवं उसके पश्चात् उत्पन्न हुई परिस्थितियों के कारण कश्मीर घाटी की हिन्दू-मुस्लिम की सांझी विरासत नष्ट हो चुकी है। साढ़े चार लाख हिन्दू जो यहां के स्थायी बाशिंदे थे, निर्वासित हो चुके हैं। चंद लोगों में ही उनके निर्गमन की पीड़ा है। इस्लाम के नाम पर धर्मान्धता को बढ़ावा दिया जा रहा है।

अलगाववादी ताकतें धर्म का वास्ता देकर कश्मीरी अवाम को अलगाववाद की ओर धकेल रही हैं। अंदरूनी सरकारी भ्रष्टतंत्र, पुलिसवालों की सख्ती, बेरोजगारी, उद्योग एवं विकास की कमी तथा सुरक्षा बलों के प्रति रोष से वहां का सामान्य वर्ग भी इन उग्र अलगाववादियों के समक्ष झुकता हुआ सा प्रतीत हो रहा है। यही कारण है कि जब कोई अलगाववादी या आतंकवादी सरगना सुरक्षा बलों द्वारा पकड़ा या मारा जाता है तो कश्मीर अचानक अशान्त हो जाता है जैसा कि विगत माह हिजबुल आतंकवादी बुरहान बाणी की मुठभेड़ में हुई मौत के बाद हुआ। पाकिस्तान भी ऐसे मौके पर पूरा फायदा उठाने में नहीं चूकता किन्तु विश्व उसकी करतूत को समझ चुका है और जान चुका है कि कश्मीर में जो कुछ हो रहा है वह पाकिस्तान द्वारा ही प्रायोजित है। केन्द्र सरकार को विशेष रूप से स्वयं प्रधानमंत्री को सीधे वहां की स्थिति पर दृष्टि रखते हुए कश्मीर घाटी में शान्ति बनाए रखने के समुचित उपाय करने चाहिए।

कर्मों का फल

- जगदीश कपूर

ताया जी पिछले तीन वर्षों से बीमार चल रहे थे। उनकी एक टांग में भयंकर दर्द रहता, चलने फिरने में लाचार हो गए थे। स्वयं मशहूर वैद्य थे, परन्तु अपनी टांग के दर्द का कोई इलाज नहीं ढूंढ पा रहे थे। अकेले रहते, एक सेवादार हमेशा उनके पास रहता था। सारा दिन बाहर बरामदे में बैठ कर गुजारते, वहीं मरीजों को देखते।

मैं आयुर्वेद की पढ़ाई कर रहा था, अक्सर उनके पास वैद्यक कर्माभ्यास के लिए चला जाता। खुल के बातचीत होती, अविवाहित थे, और कोई नजदीकी था भी नहीं।

एक दिन मैं पूछ बैठा, ''ताऊ जी, आप की टांग का दर्द इतना इलाज करने के बाद भी ठीक क्यों नहीं हो रहा है?मैं आपको किसी विशेषज्ञ को दिखा लाता हूं!

''नहीं बेटा, यह दर्द अब मेरे जीवन के साथ ही समाप्त होगा। यह सब मेरे कर्मों का फल है, जो मैं भुगत रहा हूं''।

''ताऊ जी मैं समझा नहीं'' मैंने कहा। ताऊ जी कहीं खो गए, थोड़ी देर के बाद चुप्पी तोड़ी।

''जब मैं 24-25 साल का था, हम लोग खेतों में तोते उड़ाने के लिए जाया करते था, छिक्कू में पत्थर डाल, घुमा कर पंछियों पर फैंकते थे। एक दिन पत्थर एक तोते को जा लगा, वह जमीन पर आ गिरा। मैंने उत्सुकता वश उसे उठा कर देखा। उसकी एक टांग टूट गई थी, वह अपाहिज हो गया था। मैंने उसे उसके हाल पर छोड़ा दिया और घर वापिस आ गया। नहीं जानता उस बेचारे का क्या हुआ होगा। मुझे आज भी वह दिन जब याद आता है तो मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं। वह अवश्य ही कराहते हुए मर गया होगा या कोई जीव उसे खा गया होगा। संज्ञान होते हुए भी मुझसे यह अपराध हुआ था, मैं आज निःसहाय हो कर इसी की सजा पा रहा हूं। बेटा कर्मों का फल इसी जन्म में भुगतना पड़ता है, मैंने उस निरीह का उपचार नहीं किया, तभी तो कोई भी दवाई मुझ पर असर नहीं कर रही है।''❖

लेखक ज़िला मंडी, हि.प्र. से हैं।

सेवा का दृष्टान्त

ठाकुरदास नामक एक वयोवृद्ध अपनी पत्नी तथा बच्चों के साथ कलकत्ते से चलकर मोदीनगर जिले के एक गांव में जा बसा। पुराना समय था। दो रूपए की नौकरी से परिवार का निर्वाह होता था। तीनों प्राणी बड़ी कठिनाई से दो रूपए के वेतन से पेट भर भोजन पाते थे। नियति बड़ी बलवती है। कालान्तर में ठाकुरदास पत्नी और इकलौते बच्चे को छोड़ संसार से चल बसा। पत्नी के कन्धे पर सारे परिवार का दायित्व आ गया। किसी प्रकार दिन कटते रहे और वर्ष बीतते रहे। एक दिन बेटा रात के समय बैठा मां के पैर भी दबा रहा था और बातें भी कर रहा था- ''मां! बड़ा होकर मैं पढ़-लिखकर विद्वान् बनूंगा और तुम्हारी बहुत सेवा करूंगा।'' बच्चे के उज्ज्वल भविष्य की कल्पना से मां की आंखों में हर्ष के आंसू थे। ''कैसी सेवा करेगा रे तू मेरी?'' ''बड़े कष्ट सहनकर तुम मुझे पढ़ा रही हो मां! मैं कमाने लगूंगा न जब-तब तुम्हें अच्छा-अच्छा खाना खिलाऊंगा और हां, तुम्हारे लिए गहने भी लाऊंगा'' बेटे ने कहा।

''हां बेटा, तू अवश्य सेवा करेगा मेरी।'' मां बोली, '' पर गहने मेरी पसन्द के ही बनवाना।''

''कौन से गहने मां।''

''बेटा सुन! मुझे तीन गहनों की चाह है। मैं चाहती हूं कि गांव में अच्छा स्कूल हो, चिकित्सालय हो और तीसरा गहना है कि निर्धन, असहाय बालकों को खाने-पीने तथा पहनने की सुविधा हो।''

बालक ने जब ये सुना तो वह भाव-विभोर हो उठा। धन्य है यह मां जिसके इतने अच्छे विचार हैं। उस दिन से अपनी मां के लिए इन तीनों गहनों (आभूषणों) को बनवाने की धुन में उसने अहर्निश परिश्रम किया। पढ़ाई समाप्त कर वह उच्च पदों पर आसीन हुआ। मां को दिए वचन को उसने निभाया। वह बराबर विद्यालय, औषधालय तथा सहायता केन्द्र खोलता चला गया। अपने पुत्र द्वारा दिए तीन आभूषणों से मां गौरवान्वित हो गई। यह महामानव और कोई नहीं, ईश्वरचंद्र विद्यासागर थे।❖ **साभार: सेवा संवाद**

जप और माला

उपांशु जप पद्धति के अनुसार यदि कोई साधक केवल 108 बार जप करता है तो उसे 10,800 जप के बराबर फल प्राप्त होता है। इसीलिए जप में संख्या संबंधी शुद्धता को बनाए रखने के लिए 108 दानों की माला को उपयोगी माना गया है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार ब्रह्मांड स्थित नक्षत्रों की संख्या 27 है। इन सभी नक्षत्रों के चरणों के स्पर्श के लिए मान्यता है कि 108 बार जप अवश्य करना चाहिए। ऐसा जप साधक का अखिल ब्रह्मांड में व्याप्त नक्षत्रीय क्षेत्र और वायुमंडल से सम्पर्क करवा देता है। खगोल विज्ञान के अनुसार प्रत्येक नक्षत्र में चार चरण होते हैं अत: 27x4x108 चरणों के स्पर्श से अखिल ब्रह्मांड को स्पर्श करने का पुण्य मिल जाता है। मानव शरीर में 108 जैविक केंद्र (साइकिक सैंटर) हैं जो मस्तिष्क में 108 तरंगें (वेव लैंथ) उत्सर्जित करते हैं। 108 मनके की माला का एक कारण यह भी है।

भारतीय अध्यात्म के विचार से भी 9 के अंक को अति पूजनीय, प्रभावी और महत्वपूर्ण स्वीकार किया गया है। ग्रह नौ हैं, नवार्ण मंत्र भी 9 हैं, नवरात्र के दिन भी नौ हैं, दुर्गा जी के अवतार भी नौ हैं। कितने ही पौराणिक प्रसंगों में 18, 1800, 18000 की संख्या का जिक्र आता है। गणना करें तो स्पष्ट हो जाता है कि इन सभी संख्याओं का मूल यही 9 का अंक है। हाथी दांत के मनकों से बनी हुई माला से जप करने पर गणेश जी प्रसन्न होते हैं। कमलगट्टे की माला का प्रयोग शत्रु के नाश और धन प्राप्ति के लिए किया जाता है। संतान प्राप्ति के लिए पुत्र जीवा की अल्प मौली माला फलदायी मानी गई है। पुष्टि कर्म के अंतर्गत सात्विक कार्यों की पूर्ति के लिए चांदी की माला सर्वोतम मानी गई है। इसका प्रभाव जप के साथ ही आरंभ हो जाता है। जबकि मूंगा (प्रवाल) की माला धारण करने व इसके जप में प्रयोग करने से गणेश और लक्ष्मी की कृपा सहज ही प्राप्त हो जाती है। धन-सम्पत्ति, द्रव्य, स्वर्ण आदि की प्राप्ति की कामना मूंगे की माला से पूर्ण हो जाती है। कुश ग्रंथ की माला कुश नामक घास की जड़ को खोद कर बनाई जाती है। कुश ग्रंथी माला समस्त कायिक, वाचिक और मानसिक पातकों का शमन करती हुई साधक को निष्कलंक, प्रदूषणमुक्त, निर्मल और सतेज बनाती है। इसके प्रयोग से तामसिक व्याधियों का विनाश होता है। चंदन की माला दो प्रकार की मिलती है- सफेद और लाल चंदन की। श्री राम, विष्णु, कृष्ण आदि देवताओं की स्तुति, पूजन-अर्चन आदि में सफेद चंदन की माला से किया गया जप देखते-देखते धन-धान्य की प्राप्ति करवा देता है। जबकि लाल चंदन की माला गणेश तथा दुर्गा, लक्ष्मी, त्रिपुर सुंदरी आदि देवी स्वरूपों की उपासना में प्रयोग में लाई जाती है। तुलसी की माला सस्ती है और सर्वत्र उपलब्ध है। इसलिए राम कृष्ण की उपासना में वैष्णव भक्त इसका बड़ी ही श्रद्धापूर्वक प्रयोग करते हैं।

आयुर्वेदिक दृष्टि से भी इसे गले में धारण करने का महत्व है। इसे लोग सुरक्षा कवच मानकर भी गले में पहने रहते हैं। सोने के मनकों वाली माला जप आदि में तो प्रयोग में कम लाई जाती है लेकिन अनुभव में आया है कि स्वर्ण माला के धारण करने से धन प्राप्ति और पुत्र प्राप्ति की कामना शीघ्र पूरी होती है। स्फटिक की माला सौम्य प्रभाव वाली होती है। इसके धारकों पर चंद्रमा और शिव जी की विशेष कृपा होती है। सात्विक और पुष्टि कार्यों के लिए इसके प्रभाव स्वयं सिद्ध हैं। शंखमाला का प्रयोग तांत्रिक विद्याओं की सिद्धि के लिए किया जाता है। शिवजी की पूजा आराधना तथा सात्विक कामनाओं की पूर्ति तथा जप आदि में इसकी लोकप्रियता शिखर पर है। वैजयंती की माला विष्णु और कृष्ण के भक्तों को प्रिय है। यह बहुप्रयोजनीय है। भक्त तो भक्त, इसे भगवान भी धारण कर सौभाग्य अर्जित करना चाहते हैं। हल्दी की माला गणेश जी की प्रसन्नता के लिए है। बृहस्पति-ग्रह तथा बग्लामुखी माता की साधना हल्दी की माला के बिना अधूरी मानी जाती है। ❖ **साभार : पंजाब केसरी**

राष्ट्र के रूप में भारत

- डॉ. उमेश कुमार पाठक

भारत एक विशाल देश है और 'समेकित संस्कृति' हमारी राष्ट्रीय पहचान। पं दीनदयाल उपाध्याय के अनुसार 'अखंड भारत देश की भौगोलिक एकता का ही परिचायक नहीं, अपितु जीवन के भारतीय दृष्टिकोण का द्योतक है जो अनेकता में एकता का दर्शन कराता है। अत: हमारे लिए अखंड भारत कोई राजनीतिक नारा नहीं है... बल्कि यह तो हमारे संपूर्ण जीवन दर्शन का मूलाधार है।' यद्यपि, यहां के लोगों का अलग-अलग वर्णों, जातियों-उपजातियों में संगठित होने के कारण उनमें पोषक-पहनावा, उसकी कांट-छांट व शैली तथा सामाजिक रीति-रिवाज की दृष्टि से विभिन्नताओं की अनुभूति होती है, फिर भी विश्व में जहां एक ओर तनाव, शिक्षा और संघर्ष है, वहीं दूसरी ओर हमारे भारत में विभिन्न संप्रदाय व पंथ के अनुयायी सदियों से मिलकर रहते आए हैं। अवलोकनार्थ, भारतीय विचार परंपरा वैदिक विचारधारा से प्रारंभ होती है जो विश्ववादी है। इसमें संपूर्ण विश्व को एक इकाई माना गया है-

'माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः'

अर्थात् भूमि माता है तथा हम पृथ्वी के पुत्र हैं। साथ ही वैदिक विचार परंपरा मनुष्य में 'आर्यत्व' की प्रतिष्ठापक है। ध्यातव्य है कि यहां 'आर्य' शब्दावली नस्लवादी न होकर श्रेष्ठ जन का परिचायक है। उदाहरण के तौर पर वैदिक ऋषि घोषणा करते हैं- 'कृण्वंतो विश्वमार्यम्' यानी हम संपूर्ण विश्व को आर्य बनाएं। निश्चय ही यह नस्ल परिवर्तन का नहीं, अपितु संस्कार संपादन का उद्घोष था। चूंकि, वर्तमान अतीत का परिणाम होता है। इसलिए वर्तमान को समझने के लिए उसके अतीत का अध्ययन करना होगा। उसी के आधार पर हम कह सकते हैं कि आज हमारा समाज ऐसा क्यों है। हमारे देश की प्रमुख विशेषता- 'विविधता में एकता' सदियों के समन्वय का प्रतिफल है। इसे प्राप्त करने में हमारे राजाओं, संतों और समाजसेवियों का बहुत बड़ा योगदान है। हमारी भारतीय चिंतन परंपरा केवल आध्यात्मिक अथवा आत्मा-परमात्मापरक विचार करने वाली नहीं है। यह लौकिक समाज की समता और राष्ट्रीय समृद्धि का भी चिंतन करती है। इसके अनुसार वर्ण व्यवस्था भारत की सुविचारित समाज व्यवस्था है। इस आलोक में वर्ण व्यवस्था सम्पन्न तथा भौतिक रूप से समृद्ध राष्ट्र के गीत वैदिक साहित्य की विशेषता है। समाज में विचारों का भेद एक स्वाभाविक प्रक्रिया है, लेकिन विचार भेद के कारण लक्ष्य भेद नहीं होता। अत: वैचारिक सहिष्णुता का प्रतिपादन करते हुए ऋग्वेद में कहा गया है- 'एकं सद् विप्रा: बहुधा वदन्ति' अर्थात् सत्य एक है, विद्वान लोग उसे अनेक प्रकार से व्याख्या करते हैं।

भारत को एकता प्रदान करने में भगवान श्रीराम की भूमिका बेमिसाल है। इस परिप्रेक्ष्य में कृष्ण भी भारत की एकता के सूत्रधार थे। वे कोई राजवंश के राजकुमार नहीं थे, बल्कि जननेता थे। उन्होंने पहले अपने आतताई मामा कंस का ही संहार किया। उसका श्वसुर मगध नरेश जरासंध निरंकुश, विस्तारवादी साम्राज्यवाद का समर्थक था। भीम द्वारा उसका वध कराकर सैकड़ों राजाओं को उसके बंदीगृह से मुक्त किया। मध्य भारत में दूसरा निरंकुश शासक शिशुपाल था, जिसका वध श्रीकृष्ण ने स्वयं किया। इस तरह निरंकुश सम्राटों की तिकड़ी नष्ट होने पर संपूर्ण भारत की जनता ने राहत की सांस ली। फिर महाभारत में दुर्योधन का नाश कर, युधिष्ठिर के नेतृत्व में प्रजावत्सल राज्य की परंपरा कायम हुई। अहिंसा, सत्य व धर्माचरण को प्रश्रय मिला।

दुर्बलों, दुखियों, स्त्रियों के मान-सम्मान की रक्षा के लिए ही वे जिए और मरे। इतना ही नहीं, श्रीकृष्ण ने नवीन

भागवत धर्म की स्थापना की जिसके द्वारा प्रकृति-पूजा का 'समाजीकरण' किया गया तथा ब्रह्मसाक्षात्कार का 'भक्तिकरण'। इन्द्रादि देवों के स्थान पर गोवर्धन एवं गोपूजा की परंपरा स्थापित की गई। दुरूह ब्रह्कल्पना का मानवीकरण करते हुए ज्ञानकाण्ड के स्थान पर भक्तिकाण्ड को प्रतिष्ठापित किया गया। वे सामाजिक न्याय के लिए निरंतर संघर्ष करते रहे। कहना गलत न होगा कि उनका प्रत्येक कार्य एक जीवन-दर्शन के रूप में विद्यमान है। दरअसल श्रीकृष्ण के उद्‌भव ने भारतीय चिंतन परंपरा में क्रांतिकारी परिवर्तन किया। वैसे तो संपूर्ण महाभारत ही विचारप्रधान ग्रंथ है; लेकिन श्रीमद्‌भगवतगीता इसमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। गीता को उपनिषदों का ही सार माना जाता है। यह दर्शन जीवन के व्यवहारिक पक्ष को ही उजागर करता है और मानव मात्र को जीने की कला बताता है। खुदीराम बोस, सावरकर बंधु, चापेकर बंधु, लोकमान्य तिलक, नेताजी, महात्मा गांधी आदि जैसे देशभक्तों के लिए यही गीता स्फूर्ति तथा प्रेरणा का मूलाधार थी।

भारत को एकता प्रदान करने में भगवान श्रीराम की भूमिका बेमिसाल है। इस परिप्रेक्ष्य में कृष्ण भी भारत की एकता के सूत्रधार थे। वे कोई राजवंश के राजकुमार नहीं थे, बल्कि जननेता थे। उन्होंने पहले अपने आतताई मामा कंस का ही संहार किया। उसका श्वसुर मगध नरेश जरासंध निरंकुश, विस्तारवादी साम्राज्यवाद का समर्थक था। भीम द्वारा उसका वध कराकर सैकड़ों राजाओं को उसके बंदीगृह से मुक्त किया। मध्य भारत में दूसरा निरंकुश शासक शिशुपाल था, जिसका वध श्रीकृष्ण ने स्वयं किया। इस तरह निरंकुश सम्राटों की तिकड़ी नष्ट होने पर संपूर्ण भारत की जनता ने राहत की सांस ली। फिर महाभारत में दुर्योधन का नाश कर, युधिष्ठिर के नेतृत्व में प्रजावत्सल राज्य की परंपरा कायम हुई। अहिंसा, सत्य व धर्माचरण को प्रश्रय मिला।

श्रीराम और श्रीकृष्ण के बाद महावीर और महात्मा बुद्ध के युग में प्रवेश करके ही हम ऐतिहासिक युग में प्रवेश करते हैं। महावीर ने विश्व को 'अहिंसा' का विज्ञान दिया। जीवों पर शासन नहीं करना चाहिए, उन्हें दास नहीं बनाना चाहिए, उन्हें दुखी नहीं करना चाहिए, उन्हें परिताप नहीं देना चाहिए। ठीक उसी प्रकार बुद्ध ने धर्म को जीवन के व्यवहारिक पक्ष से जोड़ा। और, इसके लिए उन्होंने निष्ठा, सदाचार और सत्य पर आधारित जीवन पर बल दिया। आठवीं सदी से लेकर सोलहवीं सदी तक अरबी, तुर्की, अफगानी, मंगोल आक्रमण भारत पर हुए। दिल्ली में इस्लाम के अनुयायियों का केंद्र स्थापित हुआ। लगभग 700 वर्षों तक अरब, तुर्क, अफगान, मुगल और हिंदू सम्पूर्ण भारत में अपने राजनैतिक वर्चस्व के लिए संघर्ष करते रहे। उस संघर्ष के दौरान इन विभिन्न समुदायों को एक-दूसरे को समझने का मौका मिला। इस दिशा में भक्ति आंदोलन और सूफी संतों ने बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। संत रामानंद और उनके शिष्य कबीर ने हिंदू और इस्लाम धर्म के समन्वय पर बल दिया। कबीर, गुरूनानक, खुसरो आदि जैसे संत व साहित्यकारों ने हिंदू और इस्लामी विचारों के बीच समन्वय की प्रक्रिया शुरू की। वह समन्वय भोजन, पोशाक, वस्तुशिल्प, संगीत आदि के क्षेत्रों में विकसित हुआ। गुरूनानक के अनुयायी सिख लोगों का समुदाय संपूर्ण भारत में फैला है। ये विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

समवेततः भारत की आंतरिक शक्ति का रहस्य सहिष्णुता है जो विभिन्न आचार-विचारों, रीति-रिवाजों को साथ-साथ फलने-फूलने का मौका देती है। यही मिली-जुली संस्कृति हमारी सार्वभौम राष्ट्रीयता का बुनियादी तत्व है जिस पर देश की एकता व अखण्डता आधारित है। अंततः पं. दीनदयाल उपाध्याय के शब्दों में 'राष्ट्र के प्रति भक्ति तथा अपने राष्ट्र के जनसमूह के प्रति सहानुभूति की भावना का मूल कारण न तो हमारी यह स्वार्थों की एकता है और न ही समान शत्रुत्व या मित्रत्व ही। हमारी देशभक्ति तो राष्ट्र के संपूर्ण जन समाज के प्रति ममत्व की भावना के कारण है जो कि एकात्मत्व का ही परिणाम है। व्यक्ति की आत्मा के समान ही राष्ट्र की भी आत्मा होती है' (राष्ट्रधर्म, अंक 3-4, पृ.सं. 125)।❖

लेखक हि.प्र. विश्वविद्यालय क्षेत्रीय केन्द्र, धर्मशाला में पत्रकारिता व जनसंचार विभाग में अध्यापन का कार्य करते हैं।

जम्मू-कश्मीर में बड़े फैसलों की जरूरत

- मारूफ राजा

कश्मीर में हिजबुल मुजाहिदीन के कमांडर की मौत के बाद हालात बिगड़े हैं। घाटी में असंतोष फैला है और हम एक बार फिर लाचार नजर आ रहे हैं। बार-बार कवायद की जाती है, जिसे हम दशकों से देखने के आदी हैं। हमारे राजनेता और राजनयिक पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के भाषण दोहराते नजर आते हैं। यह कश्मीर के मसलों को समझने की कोशिश नहीं की गई। वहां के अंदरूनी हालात को ठीक करने के लिए गंभीरता से सोचा ही नहीं गया। इसे कश्मीरी आवाम के साथ धोखा भी कह सकते हैं। इसी का नतीजा है कि यहां की युवा पीढ़ी में हताशा दिखती है। बुरहान वानी के मामले में रणनीतिक कमजोरियां साफ नजर आती हैं हमें एहसास होना चाहिए था कि उसकी मौत के बाद असंतोष भड़क सकता है। हमें इन हालात से निपटने की तैयारी पहले से करनी चाहिए थी। बुरहान की मौत के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच तीखी बयानबाजी का दौर शुरू हो गया है। पाकिस्तान बुरहान को लेकर जो भी कहे, लेकिन वह एक आतंकवादी ही था। कुछ समय पहले उसने पुलिस वालों की हत्या भी की थी।

ऐसा भी बताया जा रहा है कि वह राज्य के विधानसभा चुनाव के समय अलग-अलग इलाकों में घूम रहा था। लेकिन चुनाव के समय हालात एकदम ने बिगड़ जाएं, इसलिए सुरक्षा बल के जवानों ने तब उसे निशाना बनाने से परहेज किया। लेकिन बुरहान की आवाजाही से साफ था कि सीआरपीएफ की तरफ से ढिलाई बरती गई। कश्मीर में कुछ चीजें बार-बार देखने को मिलती हैं।

आखिर हुर्रियत कॉन्फ्रेंस के उन लोगों को काबू में करने या पकड़ने में हमें दिक्कत क्यों आनी चाहिए, जो खुलेआम नारा लगाते हैं कि भले उनके पास भारतीय पासपोर्ट हैं, लेकिन वे भारतीय नहीं हैं? हम उन्हें अलगाववाद की राजनीति करने का पूरा मौका देते हैं। वे भारत के बारे में जो चाहे बोलते हैं, लेकिन हम ठिठके हुए रहते हैं। क्या नीति है हमारे पास? बुरहान की मौत के बाद

हिजबुल मुजाहिदीन चीफ सलाहुद्दीन और मुंबई हमले के मास्टरमाइंड हाफिज सईद ने मुजफ्फराबाद में भड़काऊ भाषण दिए। भारत की जमीन पर या सीमा के उस पार, जहां भी ऐसी गतिविधियां होती हैं, क्या उनके खिलाफ हम केवल कड़ी प्रतिक्रिया देने तक ही सीमित रह जाएंगे? हुर्रियत या ऐसे तत्वों से निपटने के लिए हम सख्त क्यों नहीं हो पाते?

पाकिस्तान के आतंकी सरगनाओं के अलावा बुरहान की मौत पर इस्लामाबाद ने भी भारत को घेरने की कोशिश की है। उसकी मंशा यही है कि वह सुरक्षा बल की इस कार्रवाई को दमनपूर्ण बताकर अंतर्राष्ट्रीय जगत में भारत की छवि खराब करे। भारत को बदनाम करने के लिए पाकिस्तान अपनी तरफ से कोई मौका नहीं छोड़ना चाहता। जब कहीं बात बिगड़ती है या भारत से कहीं चूक हो जाती है, तो पाकिस्तान तुरंत सक्रिय हो जाता है। बुरहान की मौत के बाद पाकिस्तान में मातम मनाया गया। उस आतंकी को श्रद्धांजलि देते हुए कहा गया कि कश्मीर के हालात पर पाकिस्तान को फायदा उठाना चाहिए। पाकिस्तान के लिए भारत की नीति इसके उलट होनी चाहिए। हमें विश्व समुदाय को अंतर्राष्ट्रीय मंचों से यह बताना चाहिए कि जिसको मारा गया, वह एक आतंकी है, और उसके आतंकी होने से संबंधित तमाम सबूत भारत के पास हैं। भारत को उल्टे पाकिस्तान से यह पूछना चाहिए कि एक आतंकवादी के मारे जाने पर वह इतना दुखी क्यों है। पाकिस्तान आतंक की नर्सरी है, इसलिए भारत के आतंकवाद-विरोधी कदम पर वहां प्रतिक्रिया होती है। यहां तक कि पाक प्रधानमंत्री नवाज ठीक है कि जम्मू-कश्मीर में साझा सरकार है। लेकिन ऐसे हालात में केंद्र सरकार से कुछ बड़ी अपेक्षा रहती है। उसे कई महत्वपूर्ण फैसले अपने स्तर पर लेने पड़ते हैं। उन चीजों को दरकिनार भी किया जा सकता है, जो राज्य में साझा सरकार चलाने के लिए अहमियत रखती हो। कितना अजीब है कि एक तरफ पाकिस्तान भारत को घेर रहा है, दूसरी तरफ आतंकी संगठनों से निपटने के मसले पर केंद्र और जम्मू-कश्मीर की मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती के बीच एक राय नहीं दिखती। कश्मीर के हालात से निपटने के लिए अब यही रास्ता रह गया है कि इस लड़ाई के लिए पांच साल का एक प्रारूप तैयार हो। जरूरत पड़े, तो राष्ट्रपति शासन लगाने में भी संकोच नहीं करना चाहिए। पंद्रह साल पहले भाजपा नेता लालकृष्ण आडवाणी को भी यही सुझाव दिया गया था कि सबसे पहले कश्मीर के अंदरूनी हालात ठीक करने होंगे। बातचीत के रास्ते से इसके हल होने की बात सुनने में अच्छी लगती है, पर इसके आसार दूर-दूर तक नहीं दिखते। हम बार-बार अपनाया गया तरीका ही अपनाते हैं? इसलिए बार-बार पाकिस्तान को हममें कमियां दिख जाती हैं। हकीकत यह है कि कश्मीर पर हम उलझते ही चले गए। जबकि इसे सुरक्षा, विकास और आतंकवाद के खिलाफ एक परियोजना के रूप में लेना चाहिए। कश्मीर पर युद्ध स्तरीय सक्रियता दिखाने के लिए सबसे पहले तो इस मसले को प्रधानमंत्री कार्यालय से जोड़ना चाहिए। आतंकवाद की लड़ाई केवल हथियार की नहीं है, यह एक धारणा की भी लड़ाई है, लिहाजा इसका खात्मा करने के लिए बड़े अभियान के तौर पर इससे निपटना चाहिए। पुरानी लीक पर चलने से कुछ नहीं होगा।❖**साभार हिन्दुस्तान टाइम्स**

> ***आखिर हुर्रियत कॉन्फ्रेंस के उन लोगों को काबू में करने या पकड़ने में हमें दिक्कत क्यों आनी चाहिए, जो खुलेआम नारा लगाते हैं कि भले उनके पास भारतीय पासपोर्ट हैं, लेकिन वे भारतीय नहीं हैं? हम उन्हें अलगाववाद की राजनीति करने का पूरा मौका देते हैं। वे भारत के बारे में जो चाहे बोलते हैं, लेकिन हम ठिठके हुए रहते हैं। क्या नीति है हमारे पास?बुरहान की मौत के बाद हिजबुल मुजाहिदीन चीफ सलाहुद्दीन और मुंबई हमले के मास्टरमाइंड हाफिज सईद ने मुजफ्फराबाद में भड़काऊ भाषण दिए। भारत की जमीन पर या सीमा के उस पार, जहां भी ऐसी गतिविधियां होती हैं, क्या उनके खिलाफ हम केवल कड़ी प्रतिक्रिया देने तक ही सीमित रह जाएंगे?हुर्रियत या ऐसे तत्वों से निपटने के लिए हम सख्त क्यों नहीं हो पाते?***

हम अपनी भूमिका तय करें, जिससे राष्ट्र विरोधी ताकतें अपना सिर न उठा पाएं

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के उत्तर क्षेत्र संघचालक डॉ. बजरंग लाल जी गुप्त ने कहा कि किसी भी देश के लिए उसका स्वाभिमान सर्वोपरि होता है। यदि कोई देश अपना स्वाभिमान खो देता है तो उसका पतन निश्चित है। वह चिंतपूर्णी में हिमाचल प्रांत के संघ शिक्षा वर्ग प्रथम वर्ष के समारोप कार्यक्रम में स्वयंसेवकों को संबोधित कर रहे थे।

कार्यक्रम की अध्यक्षता सेवानिवृत्त कर्नल देशराज ने की। डॉ. बजरंग लाल गुप्त मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहे। 26 जून से प्रारंभ हुए इस संघ शिक्षा वर्ग में कर्मचारी, व्यवसायी, शिक्षक एवं इंजीनियर के साथ-साथ विश्वविद्यालय, स्कूलों एवं कॉलेजों के विद्यार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। वर्ग में 15 से 40 वर्ष की आयु के कुल 183 शिक्षार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

उत्तर क्षेत्र संघचालक ने कहा कि संघ का काम राष्ट्र में चरित्र निर्माण करना है। संघ के प्रशिक्षित स्वयंसेवक समाज निर्माण में अपनी भूमिका तय करें, जिससे राष्ट्र विरोधी ताकतें उठ न पायें। समाज की हर चुनौती का सामना करने के लिए वे हर समय तैयार रहें, जिससे प्रशिक्षण के सही उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सके। विश्व को आज सभी समस्याओं से बाहर निकालने की शक्ति अगर किसी में है तो वह भारतीय संस्कृति है।

कार्यक्रम अध्यक्ष कर्नल देशराज ने कहा कि प्रशिक्षण वर्ग के कार्यक्रम का स्वरूप भारतीय सेना की कार्यप्रणाली के समान ही है, जहां पर हर जाति के व्यक्ति समान रूप से देश सेवा से जुड़े होते हैं। उन्होंने कहा कि देश में सेना के कार्यों के प्रति लोगों में अपार श्रद्धा है जो लोग सेना की कार्यप्रणाली पर सवाल उठा रहे हैं, उनको लोगों के गुस्से का शिकार बनना पड़ेगा। उन्होंने युवाओं का आह्वान किया कि वे राष्ट्रीय प्रतीकों का न केवल सम्मान करें, बल्कि ऐसा करने के लिए दूसरों को भी प्रेरित करें।

वर्ग के समारोप समारोह में हिमाचल प्रांत संघचालक सेवानिवृत्त कर्नल रूपचंद, वर्गाधिकारी सेवानिवृत्त आईएएस जीतराम कटवाल, वर्ग कार्यवाह किस्मत कुमार, क्षेत्र प्रचारक प्रेम कुमार, अशोक कुमार एवं प्रांत प्रचारक संजीवन कुमार सहित संघ के वरिष्ठ कार्यकर्ता और बड़ी संख्या में स्थानीय लोग उपस्थित रहे। ❖ **साभार : विसंकें, शिमला**

हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय में अखण्ड भारत विषय पर सेमिनार

अमेरिकी NGO 'समर्थ भारत' की ओर से हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के लॉ संकाय के सभागार में अखण्ड भारत विषय पर समर्थ भारत-सशक्त भारत-सक्षम भारत के परिप्रेक्ष्य में आयोजित एकदिवसीय सेमिनार में वक्ताओं राष्ट्रीय सुरक्षा, स्वदेशी, मूल्य परक शिक्षा पर अपने विचार रखे।

कवि गजेन्द्र सोलंकी ने तो सभ्यता, संस्कृति, भाषा व परिवेश पर प्रेरणदायी व ओजस्वी कविता का पाठकर उपस्थित जनसमुदाय को मंत्रमुग्ध कर दिया।

लॉ संकाय की छात्रा कुमारी शैलजा को पी. एच.डी में गोल्डमेडल प्राप्त करने के लिए 'समर्थ भारत' के अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री हेमन्त काले ने पुरस्कार स्वरूप रूपये 21000/- की राशि भेंट की। इस कार्यक्रम में सरदार जसबीर सिंह राष्ट्रीय सिक्ख संगत, कवि गजेन्द्र सोलंकी, हेमन्त काले NRI न्यूयार्क, सोशल मीडिया एक्टिविस्ट तेजेन्द्र पाल सिंह व अन्य विशेष उपस्थित रहे।❖

हिन्दू समाज की सुरक्षा के लिए पनप रही चुनौती

कैराना (प० उ० प्रदेश) में हिन्दुओं के पलायन के समाचार से हिंदु समाज पर मण्डरा रहे एक खतरे की ओर सम्पूर्ण भारत का ध्यान आकर्षित हुआ है। विश्व हिन्दू परिषद गत 30 वर्षों से चल रहे निरंतर हिन्दू पलायन के सम्बन्ध में चेतावनी देता रहा है। स्वतंत्र भारत में हिन्दू समाज को सबसे पहले कश्मीर घाटी में इसका भीषण एवं वीभत्स स्वरूप झेलना पड़ा। परन्तु सम्पूर्ण देश का अध्ययन करने पर ध्यान में आता है कि हिन्दुओं का यह दर्दनाक पलायन केवल कश्मीर घाटी या प० उत्तर प्रदेश तक सीमित नहीं है, भारत के कई प्रांत कम या अधिक मात्रा में हिन्दू पलायन की इस समस्या से ग्रस्त हैं। कश्मीर घाटी से शुरू हुआ यह पलायन अब जम्मू के पुंछ, राजौरी, किश्तवाड, डोडा, रामबन, भद्रवाह के अतिरिक्त जम्मू शहर की कई कालोनियो को भी अपनी चपेट में ले रहा है। परन्तु इन सब स्थानों से हुए पलायन से ध्यान में आ रहा है कि भारत में कई "कैराना" पनप रहे हैं और हिन्दू को अपने ही देश में कई स्थानों पर पलायन की विभीषिका का सामना करना पड़ रहा है।

हिन्दू पलायन की इस विभीषिका के खतरे के सम्बन्ध में देश के कई प्रबुद्ध चिंतक बार- बार समाज व सरकारों को चेतावनी देते रहे हैं। 12 वर्ष पूर्व उत्तर प्रदेश के तत्कालीन राज्यपाल व आई० बी० के पूर्व प्रमुख टी० व्ही० राजशेखर ने स्पष्ट चेतावनी देते हुए कहा था कि "प० उ० प्र० में कई पाकिस्तान पनप रहे हैं। इन तत्वों पर अगर नियंत्रण नहीं किया गया तो वहां पर उपस्थित हिंदू समाज व कानून व्यवस्था के लिए बड़ा खतरा निर्माण हो जायेगा।" कई पूर्ण जिलाधीश कहते हैं कि वे दिन की रोशनी में भी इन इलाकों में नहीं जा सकते थे। इसी प्रकार कश्मीर की घाटी, बंगाल, असम, बिहार आदि प्रदेशों की स्थिति पर भी बार- बार चेतावनी मिलती रही है।

विहिप की प्रबंध समिति हिन्दु पलायन की इस स्थिति पर गंभीर चिंता व्यक्त करती है। विहिप का यह स्पष्ट अभिमत है कि छद्म सेक्युलरवादी राजनैतिक दलों के संरक्षण में ही जेहादी तत्व हिंदू समाज को प्रताड़ित करते हैं और उनको अपनी जन्मभूमि छोड़ने के लिए मजबूर करते हैं। चंद मुस्लिम वोटों के लिए ये राजनीतिक दल न केवल हिंदू समाज की सुरक्षा अपितु इन स्थानों की कानून व्यवस्था तथा राष्ट्रीय सुरक्षा को भी खतरे में डालते हैं। इन सब स्थानों का अध्ययन करने पर ध्यान में आता है कि इन्हीं स्थानों पर आतंकी शरण लेते हैं और देश में आतंकी गतिविधियों का संचालन करते हैं। ❖

बाबा बाल जी

कोटला कलां
ज़िला ऊना, हिमाचल प्रदेश
सभी भक्तों को
श्री गुरू पूर्णिमा की
हार्दिक शुभकामनाएं

मारवाड़ का रक्षक: वीर दुर्गादास राठौड़

अपनी जन्मभूमि मारवाड़ को मुगलों के आधिपत्य से मुक्त कराने वाले वीर दुर्गादास राठौड़ का जन्म 13 अगस्त, 1638 को हुआ था। उनके पिता मालवा के ठाकुर री आसकरण तथा माता नेतकंवर थीं। आसकरण की अन्य पत्नियां नेतकंवर से जलती थीं। अत: आसकरण ने उसे सालवा के पास लूणवा गांव में रखा था। छत्रपति शिवाजी की तरह दुर्गादास का लालन-पालन उनकी माता ने ही किया। उन्होंने दुर्गादास में वीरता के साथ-साथ देश और धर्म पर मर-मिटने के संस्कार डाले। उस समय मारवाड़ में राजा जसवन्त सिंह (प्रथम) शासक थे। एक बार उनके एक मुंहलगे दरबारी राईके ने कुछ उद्दण्डता की। दुर्गादास से सहा नहीं गया। उसने सबके सामने राईके को कठोर दण्ड दिया। इससे प्रसन्न होकर राजा ने दुर्गादास को निजी सेवा में रख लिया और अपने साथ अभियानों में ले जाने लगे। वे उसकी वीरता, आत्मविश्वास, स्पष्टवादिता, कूटनीति आदि गुणों से बहुत प्रभावित थे। एक बार उन्होंने दुर्गादास को 'मारवाड़ का भावी रक्षक' कहा; पर दुर्गादास सदा स्वयं को मारवाड़ की गद्दी का सेवक ही मानते थे।

उस समय उत्तर भारत में औरंगजेब प्रभावी था। उसकी कुदृष्टि राजस्थान पर भी थी; पर राजस्थानी वीरों ने उसके षड्यन्त्र पूरे नहीं होने दिए। जसवन्त सिंह भी मन से औरंगजेब के प्रबल विरोधी थे। नवम्बर 1678 में उनकी मृत्यु होते ही औरंगजेब ने जोधपुर रियासत को अपने अधिकार में लेकर वहां शाही हाकिम बैठा दिया। दुर्गादास के लिए यह बहुत कठिन घड़ी थी। जसवन्त सिंह के देहान्त के समय उनका पुत्र अजीत सिंह एक वर्ष का भी नहीं था। दुर्गादास ने उसे सिरोही के पास कालिन्दी गांव में पुरोहित जयदेव के घर रखा तथा मुकुनदास खीची को साधु वेश में उसकी रक्षा के लिए नियुक्त कर दिया। इसके बाद दुर्गादास ने मारवाड़ के सामन्तों को एकत्र कर छापामार शैली में मुगल सेनाओं पर हमले शुरू कर दिए। वे जानते थे कि मारवाड़ की शक्ति कम है, अत: उन्होंने मेवाड़ के महाराणा राजसिंह तथा मराठों से सम्पर्क किया; पर इसमें उन्हें पूरी सफलता नहीं मिली। अब उन्होंने औरंगजेब के छोटे पुत्र अकबर को शासक बनाने का लालच देकर अपने पिता के विरूद्ध विद्रोह के लिए तैयार किया; पर दुर्भाग्यवश यह योजना भी पूरी नहीं हो पाई।

इसके बाद भी दुर्गादास अपने प्रयत्नों में लगे रहे; औरंगजेब की मृत्यु के बाद उनके 30 साल के प्रयास सफल हुए। 20 मार्च, 1707 को महाराजा अजीत सिंह ने धूमधाम से जोधपुर दुर्ग में प्रवेश किया। वे जानते थे कि इस सफलता का श्रेय दुर्गादास को है, अत: उन्होंने दुर्गादास से रियासत का प्रधान पद स्वीकार करने का आग्रह किया; पर दुर्गादास ने विनम्रतापूर्वक इसमें असमर्थता व्यक्त की। उनकी अवस्था भी अब इस योग्य नहीं थी। अत: वे अजीतसिंह की अनुमति लेकर सादड़ी चले गए।

इस प्रकार उन्होंने महाराजा जसवन्त सिंह द्वारा उन्हें दी गई उपाधि 'मारवाड़ का भावी रक्षक' को सत्य सिद्ध कर दिखाया। उनकी प्रशंसा में आज भी मारवाड़ में निम्न पंक्तियां प्रचलित है-

माई ऐहड़ौ पूत जण, जेहड़ौ दुर्गादास
मार गण्डासे थामियो, बिन थाम्बा आकास।।❖

साभार: हर दिन पावन

गंगा को निर्मल बनाने के लिए उत्तराखंड में 47 परियोजनाओं का शुभारंभ

20 हजार करोड़ रूपए की महत्त्वाकांक्षी योजना 'नमामि गंगे' की 7 जुलाई को विधिवत् शुरूआत की गई। केंद्रीय सड़क परिवहन मंत्री नितिन गडकरी, जल संसाधन एवं गंगा संरक्षण मंत्री उमा भारती और उत्तराखंड के मुख्यमंत्री हरीश रावत ने गंगा को निर्मल बनाने के लिए अभियान का हरिद्वार में शुभारंभ किया। इस योजना के अंतर्गत उत्तराखंड में 47 परियोजनाओं का शुभारंभ किया गया, इसके तहत सीवेज ट्रीटमेंट संयत्रों के विकास एवं नवीनीकरण, गंगा के किनारे पौधारोपण तथा जैव विविधता के संरक्षण कार्यों को शामिल किया गया है। श्री गडकरी और सुश्री भारती ने गंगा को प्रदूषण मुक्त करने के लिए जन सहभागिता पर जोर दिया। इसके साथ ही उन्होंने सन् 2018 तक गंगा को प्रदूषण मुक्त कराने का संकल्प भी दोहराया। उन्होंने इसके लिए सख्त कानून बनाने की बात कही। सुश्री भारती ने कहा कि इस संबंध में सख्त कानून बनाया जाएगा, जिसे राज्यों की सहमति के बाद पूरे देश में लागू किया जाएगा। गंगा को मैला करने वाले संस्थानों और औद्योगिक इकाइयों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी।

क्या होगा इस परियोजना से

* गंगा 40 प्रतिशत आबादी को प्रभावित करती है।
* यह 2500 किलोमीटर की यात्रा करती है।
* अभी करीब 700 बड़ी औद्योगिक इकाइयों का 50 करोड़ लीटर कचरा नदी में रोजाना मिल जाता है। इन्हें मिलाकर लगभग 150 करोड़ लीटर कचरा नदी में प्रतिदिन समा जाता है।
* इस परियोजना पर 5 साल में 20 हजार करोड़ रूपए खर्च कर कई कदम उठाए जा रहे हैं।
* इसके तहत उत्तर प्रदेश में 112, उत्तराखंड में 47, बिहार में 26, प.बंगाल में 20 और झारखंड में 19 योजनाएं चलेंगी। इसमें दिल्ली में यमुना में 7 योजनाएं भी शामिल की गई हैं।
* औद्योगिक और शहरी कचरे को रोकने और उन्हें साफ कर गंदगी को नदी में रोकने के प्रयास तेज किए गए हैं।
* शहरी कचरे को रोकने के लिए अगले पांच साल में 2500 एमएलडी अतिरिक्त क्षमता वाले ट्रीटमेंट प्लांट लगाए जाने की योजना है।
* नदी से सटे 30 हजार हेक्टेयर इलाके में पेड़-पौधे लगाए जाएंगे। 113 रीयल टाइम वाटर क्वालिटी मॉनीटरिंग स्टेशन बनाए जाएंगे।
* गंगा के किनारे बसे गांवों में स्वच्छता पर जोर देने के साथ शौचालयों के निर्माण पर भी ध्यान केंद्रित किया जा रहा।
* श्मशान घाटों पर भी ऐसी व्यवस्था पर जोर है ताकि अधजले या बिना जले शव नदी में न बहाए जाएं।❖

साभार : वि.सं.कें. देहरादून

कश्मीर में घुसे 60 आतंकी, 35 किमी. लंबा राजमार्ग बना जवानों के लिए खतरा

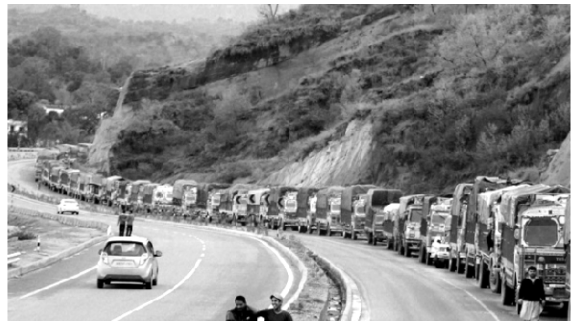

जम्मू-कश्मीर में इन दिनों सुरक्षाबलों पर आतंकी हमलों में इजाफा हुआ है। खुफिया जानकारी के अनुसार करीब 60 आतंकी सीमा पार से राज्य में घुस गए हैं और उनको स्पष्ट तौर पर सेना, बीएसएफ, सीआरपीएफ, एसएसबी और पुलिस को निशाना बनाने का निर्देश दिया गया है। विदित ही है कि 25 जून को पंपोर हमले में सीआरपीएफ के 8 जवान शहीद हो गए थे जबकि जवाबी कार्रवाई में दो आतंकी मारे गए थे। लश्कर-ए-तैय्यबा ने इस हमले की जिम्मेदारी ली है। इस हमले के बाद खुलासा हुआ है कि 300 किमी लंबे जम्मू-श्रीनगर राष्ट्रीय राजमार्ग के बिजबेहाड़ा से पंपोर के बीच 35 किमी0 का हिस्सा सुरक्षाबलों के लिए सिरदर्द बन गया है। पिछले सात महीने में आतंकियों ने छह बार से अधिक बार राष्ट्रीय राजमार्ग के इस हिस्से में सुरक्षाबलों को निशाना बनाया, जिसमें एक दर्जन से अधिक लोगों की जानें गईं। राजमार्ग का यह हिस्सा दक्षिण कश्मीर में आता है। एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी के अनुसार, दिसंबर 2015 से राजमार्ग के इस हिस्से में कई हमले होने के बाद श्रीनगर से लगे हिस्से में सुरक्षाबलों की थोड़ी बहुत तैनाती की गई है। पंपोर हमला सजग करने वाला है, जो शीर्ष सुरक्षा अधिकारियों को इसकी समीक्षा करने के लिए मजबूर किया है। बिजबेहाड़ा से पंपोर के बीच राजमार्ग पर सोमवार को 29 सुरक्षा वाहनों को तैनात किया गया, उसमें से अधिकतर बख्तरबंद वाहन हैं। सीआरपीएफ और सेना की रोड़ ओपनिंग पार्टियां इस मार्ग पर नजर रख रही हैं।❖

इलाज का लालच देकर करा रहे थे धर्मांतरण

उत्तर प्रदेश के रायबरेली जिला स्थित ऊंचाहार क्षेत्र के जमालपुर माफी गांव में बीमारी का निशुल्क इलाज करने का लालच देकर धर्मांतरण का बड़ा मामला सामने आया है। स्थानीय हिन्दु संगठनों ने शिकायत पर पुलिस ने सौ से ज्यादा महिलाओं-पुरूषों को हिरासत में लिया है। सुनसान स्थान पर बने भवन में धर्मांतरण का कार्यक्रम चल रहा था। इसकी भनक लगते ही बड़ी संख्या में लोग पहुंच गए। भवन के अंदर ईशू की भक्ति के लिए लोगों को समझाया जा रहा था। ईसाई धर्म छोड़कर अन्य धर्मों की बुराई की जा रही थी। भवन में मिशनरी का साहित्य व प्रार्थना वाद्य यंत्र भी मिला। सभी लोगों को कोतवाली लाया गया। बाद में महिलाओं को छोड़ दिया गया। अगुवाई कर रहे महिलाओं व पुरूषों से पुलिस अभी भी पूछताछ कर रही है। तहसीलदार ने बताया कि लोगों को इलाज के लिए बुलाया गया और ईसाई धर्म स्वीकार करने का दबाव डाला गया।❖

साभार: नई दुनिया

SHIVALIK HOSPITAL
Near Police Lines, Jhalera, Una (H.P.)
Mob.: 98059-33644

Dr. Akshay Sharma
MBBS (MAMC Delhi) (Gold Medalist)
MS (MAMC Delhi) Regd. MCI-7841
General & Laproscopic Surgeon
Ex. Senior Registrar LNJP &
GB Pant Hospital New Delhi

Dr. Anupma Sharma
MBBS, MD (PGI Chandigarh)
SKIN SPECIALIST
Regd. PMC-28190

Facilities Available: General & Specialist OPD, Indoor Admission Facilities, Fully equipped Operation Theatre, All Major & Minor Operations, Laproscopic Gall bladder Removal, Nebulization therapy for Asthma, ECG/X-Ray, Blood Tests.

अब देश में बनेगी 16 नैनो मीटर की चिप

नैनो चिप के लिए देश को अब अमेरिका व जापान पर निर्भर नहीं होना पड़ेगा। देश में ही अब 16 नैनो मीटर की चिप बनेगी। इसे मेक इन इंडिया की दिशा में बड़ा कदम माना जा रहा है। इसे विकसित किया है भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आइआइटी) मंडी के चार शोधकर्ताओं ने। चार साल के अनुसंधान के बाद नॉन कंपाउंड फोटोरिसिस्ट मेटीरियल (चिप की कोटिंग में इस्तेमाल होने वाला रसायन) तैयार किया गया है। इससे रक्षा, स्वास्थ्य व प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में देश आगे बढ़ेगा। अनुसंधान पर करीब पांच करोड़ रूपए खर्च आया है। आइआइटी के चार शोधकर्ताओं ने इस पर दिन-रात कड़ी मेहनत की और मुकाम हासिल किया। केंद्र सरकार ने भी लैब विकसित करने के लिए सात करोड़ रूपए की राशि मंजूर की है। अमेरिका की इंटेल कंपनी ने स्कूल ऑफ कम्प्यूट्रिंग एवं इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग की नॉन कंपाउंड फोटोरिसिस्ट मेटीरियल तैयार करने के लिए वर्ष 2012 में एक प्रोजेक्ट सौंपा था। इसके लिए शोधकर्ताओं को इंटेल कंपनी की तरफ से दो करोड़ रूपए की आर्थिक सहायता दी गई थी। इस प्रोजेक्ट पर प्रो. कैंथ गोंजल्विस के नेतृत्व में डॉ. सतेंन्द्र शर्मा, डॉ. सुब्रता घोष व डॉ. प्रदीप परमेश्वरम् ने अनुसंधान किया। अनुसंधान के दौरान जो मेटीरियल तैयार होता गया उसका वैज्ञानिक आधार जांचने के लिए सैंपल हर दो माह बाद अमेरिका भेजे गए।

इंटेल कंपनी ने हर सैंपल की जांच वहां के रक्षा अनुसंधान प्रयोगशाला में करवाई। इस पर वहां करीब तीन करोड़ रूपए खर्च किए गए। इंटेल कंपनी हर सैंपल की रिपोर्ट आइआइटी मंडी को देती रही और सुधार के लिए सुझाव देती रही। गत माह यहां से मेटीरियल का जो सैंपल भेजा गया था, उसमें 16 नैनो मीटर की चिप बनाई जा सकती है। इस बात पर अमेरिका के रक्षा अनुसंधान प्रयोगशाला ने भी अपनी मुहर लगा दी है। चिप बनाने में इस मेटीरियल का 40 प्रतिशत तक प्रयोग होता है। इससे 16 नैनो मीटर तक की चिप तैयार होगी। इसमें कई मिलियन ट्रांजिस्टर एक चिप में रखे जा सकते हैं। ❖

साभार : पंजाब केसरी

हिमाचल की लेखिका नंदिता को 'काव्य दीप' सम्मान

हिमाचल प्रदेश की प्रसिद्ध लेखिका एवं कवियत्री नंदिता बाली को उनकी श्रेष्ठ कविताओं के लिए काव्य दीप राष्ट्रीय सम्मान से नवाजा गया है। यह सम्मान नंदिता को उत्तर प्रदेश के पराविद्या संस्थान द्वारा संचालित शाहिद कला सम्मान परिषद ने इनकी कविताओं के लिए प्रदान किया गया है। डा फारूख कप्तानगंजवी जो कि शाहिद कला सम्मान परिषद के निदेशक हैं ने हिमाचल के बद्दी की कवियत्री को इस सम्मान से अलंकृत किया। भारत के विभिन्न राज्यों से प्राप्त विभिन्न राष्ट्रीय सम्मानों की सूची में काव्य दीप के रूप में नंदिता को यह अपने जीवन में पांचवां सम्मान मिला है। सेवानिवृत्ति के पश्चात् गृहकार्यों के अलावा नंदिता साहित्य सेवा में लीन हैं। कविता लेखन के अलावा ये आजकल अपनी पुस्तकें प्रकाशित करवाने में तल्लीन हैं। इनकी कविताओं में सामाजिक कु रीतियों पर प्रहार होता है और महिला सशक्तीकरण की ये प्रबल कार्यकर्ता हैं। अपने लेखन और पर्यावरण जागरूकता के प्रति भी व्यापक प्रचार-प्रसार करने में भी इनका अहम योगदान रहा है। वह प्रैस क्लब बददी की विशेष आमंत्रित सदस्य हैं। काव्य दीप सम्मान मिलने पर प्रैस क्लब बद्दी के पदाधिकारियों व सदस्यों ने लेखिका नंदिता बाली को बधाई दी है।❖

साभार : ईमेल से बद्दी समाचार

स्वयं के प्रति कठोर व अनुशासन प्रिय सुरेश राव केतकर का अवसान

पुणे (विसंकें)। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक एवं पूर्व सह सरकार्यवाह सुरेश रामचंद्र केतकर (82 वर्ष) का शनिवार 16 जुलाई को सुबह 8.30 बजे लातूर स्थित स्वामी विवेकानंद रूग्णालय में स्वर्गवास हो गया। पार्किन्सन की बीमारी के चलते पिछले कुछ वर्षों से वह लातूर में रह रहे थे।

सुरेश राव केतकर मूलतः पुणे के स्वयंसेवक थे। उनकी प्राथमिक शिक्षा पुणे में ही हुई। उन्होंने बीएससी, बीएड की डिग्री हासिल करने के पश्चात् खडकी स्थित आलेगावकर विद्यालय में एक वर्ष अध्यापक के रूप में काम किया तथा वर्ष 1958 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक बनने का निश्चय किया। प्रचारक के रूप में उन्होंने सांगली जिला, सोलापूर जिला और लातूर विभाग में कार्य किया। मा. सुरेश राव केतकर ने महाराष्ट्र प्रांत के शारीरिक शिक्षण प्रमुख, तथा क्षेत्र प्रचारक, अखिल भारतीय शारीरिक शिक्षण प्रमुख, अखिल भारतीय सह सरकार्यवाह, अखिल भारतीय प्रचारक प्रमुख का दायित्व निभाया।

ऊर्जा से ओतप्रोत केतकर जी पूरे देश के लाखों कार्यकर्ताओं के परिवार के अभिभावक जैसे थे। उनके द्वारा खड़े किए गए हर एक कार्यकर्ता पर उनकी आत्मीयतापूर्ण शैली का प्रभाव था। पूरे देश में यात्रा करते हुए मिलने वाले कार्यकर्ताओं की सारी जानकारी लेकर उसे ध्यान में रखने वाले और प्यार से उनकी आवभगत करने वाले केतकर जी संघकार्य का जीता जागता स्मृतिकोष थे।

पिछले कुछ वर्षों में बढ़ती उम्र तथा कई शारीरिक समस्याओं के उपरांत भी उन्होंने संघकार्य जारी रखा था। शारीरिक शिक्षण विषय में उन्हें खास रूचि थी। शारीरिक योजना में उनका कफी योगदान था। वे पुरानी पीढ़ी के कर्मठ प्रचारक के रूप में जाने जाते थे। अस्वस्थ होने तक वे प्रतिदिन व्यायाम, सूर्य नमस्कार स्वयं भी करते थे और औरों को भी व्यायाम के लिए आग्रह करते थे। भारतीय मजदूर संघ, संस्कार भारती, भारतीय किसान संघ आदि संस्थाओं का पालकत्व भी उनके पास था।

जब वे सह सरकार्यवाह थे, तब उनका प्रवास के दौरान राजस्थान के जयपुर, कोटा, भीलवाड़ा, ब्यावर, बांसवाडा आदि स्थानों पर संघ शिक्षा वर्ग एवं प्रचारक बैठकों के निमित्त आना हुआ। वे बहुत अनुशासन प्रिय थे। स्वयं के प्रति भी बहुत ही कठोर थे। उनका कोटा प्रवास पर आना हुआ। उस दिन उन्हें **102** डिग्री बुखार था। तेज बुखार होने के बाद भी उन्होंने जिला की बैठक ली।❖

साभार : ईमेल से vskbharat द्वारा प्रेषित

पृष्ठ 22 का शेष. . .

राजव्यवस्था में पूजा पद्धति के अनुसार कुछ लोगों के लिए अलग व्यवहार हो। उपासना पद्धति के अनुसार अलग-अलग व्यवहार को ही इन लोगों ने 'सर्व-धर्म-सम- भाव' का नाम दिया है। विषम भाव को ही समभाव कहने का साहस यह धर्मनिरपेक्षता की घोर विडंबना है। इसी तुष्टीकरण और अल्पसंख्यकवाद के चलते कुछ लोगों का साहस इतना बढ़ गया है कि, ओवेसी जैसों ने कह डाला कि, गर्दन पर छुरी रखोगे तो भी 'भारत माता की जय' नहीं कहेंगे।

भारत माता की जय का विरोध करने वाले इसलिए विरोध कर रहे हैं कि भाजपा, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ इसका समर्थन करते हैं। संघ का अंधविरोध करने के लिए देशभक्ति की भावना को भी नकारने के लिए ये लोग तैयार हैं। क्या भारत माता की जय का जयघोष आरएसएस ने तैयार किया है ?❖

भूसे से एथेनॉल बनाने की तैयारी

किसान अब अनाज ही नहीं बल्कि अनाज के भूसे से भी कमाई कर सकेंगे। ऐसा इसलिए, क्योंकि गेहूं, धान, मक्का जैसी फसलों के भूसे (पौधे के डंठल) से देश में सेकेंड जेनरेशन एथेनॉल बनाने की तैयारी शुरू हो गई है। इससे उत्पादित एथेनॉल को पेट्रोल में मिलाया जाएगा। यदि ऐसा होता है तो एक ओर किसानों को अतिरिक्त आमदनी का जरिया मिलेगा, दूसरी ओर कच्चे तेल के मामले में आयात पर निर्भरता घटेगी, जिससे महत्वपूर्ण विदेशी मुद्रा की बचत होगी। केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री की अगुवाई में विगत मास दिल्ली में एक महत्वपूर्ण बैठक हुई थी, जिसमें केंद्रीय कृषि मंत्री राधा मोहन सिंह, बिजली, कोयला, नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा तथा खान मंत्री पीयूष गोयल, रसायन, और उर्वरक तथा संसदीय कार्य मंत्री अनंत कुमार और इनके मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे। बैठक में शामिल एक अधिकारी ने बताया कि इस दौरान सेकेंड जेनरेशन के एथेनॉल के निर्माण पर विस्तृत चर्चा हुई। बताया गया कि दुनिया भर में गेहूं, धान, मक्का जैसी फसलों के भूसे से एथेनॉल बनाया जा रहा है जो कि गन्ना के शीरे से तैयार एथेनॉल के मुकाबले सस्ता पड़ता है। यह एथेनॉल सस्ता भले ही है, लेकिन गुणवत्ता में कहीं भी कम नहीं है। अधिकारियों का कहना है कि यदि देश में सेकेंड जेनरेशन एथेनॉल का उत्पादन शुरू होता है तो किसानों को फसल काटने के बाद बचे भूसे का भी उचित मूल्य मिलेगा। अभी देश के अधिकतर इलाकों में इसे खेत में ही जलाने का चलन है, जिससे पर्यावरण को बेहद नुकसान होता है। इथनॉल की ब्लेंडिंग पैट्रोल में की जाती है, यानि देश में इथनॉल का उत्पादन बढ़ने का मतलब विदेशों से कच्चे तेल के आयात पर निर्भरता कम होना। इससे विदेशी मुद्रा की भी बचत होगी। इस दौरान बताया गया कि सेकेंड जेनरेशन एथेनॉल की तकनीक उपलब्ध है, इसका कच्चा माल उपलब्ध है, इसे बनाने के लिए निवेश करने वाले लोग उपलब्ध हैं। बस कमी है तो इस बारे में एक स्पष्ट नीति की। इसलिए शीघ्र ही इसके लिए नीति का निर्माण किया जाएगा। ❖

साभार: अमर उजाला

हनुमान मंदिर बचाने साथ आए हिन्दू-मुस्लिम संगठन

रायपुर छत्तीसगढ़ में एक हनुमान मंदिर को बचाने के लिए शहर में गजब की सांप्रदायिक एकता देखने को मिली है। इसी महीने सुप्रीम कोर्ट ने रायपुर के संकट मोचन मंदिर को ढहाने का आदेश दिया था। जिसके बाद विश्व हिन्दू परिषद, बजरंग दल और छत्तीसगढ़ मुस्लिम मंच एकजुट हो गए हैं। ''अब ये हमने ठाना है, संकट मोचन को बचाना है'' के नारे के साथ इन संगठनों के लोग रायपुर की सड़कों पर निकलकर लोगों का समर्थन मांग रहे हैं और हस्ताक्षर अभियान चला रहे हैं। सुप्रीम कोर्ट ने 11 मई को अपने एक आदेश में छत्तीसगढ़ सरकार को अतिक्रमण के चलते मंदिर तोड़ने का आदेश दिया था। यह मंदिर गौरीशंकर अग्रवाल फैमिली ट्रस्ट ने नदी के किनारे बनवाया था। बातचीत में राष्ट्रीय मुस्लिम मंच के को-ऑर्डिनेटर सलीम राज ने कहा कि वह मंदिर को बचाने के लिए शहर के जयस्तंभ चौक पर एक हस्ताक्षर अभियान चलाएंगे। उन्होंने कहा, जो लोग हनुमान मंदिर को बचाना चाहते हैं वे सभी आगे आएं और पोस्टकार्ड पर और पत्रों पर हस्ताक्षर करें,, जिसे बाद में सुप्रीम कोर्ट और राष्ट्रपति को भेजा जाएगा, और उनसे मांग की जाएगी कि मंदिर को न तोड़ा जाए। छत्तीसगढ़ मुस्लिम मंच के प्रदेश अध्यक्ष युनूस कुरैशी ने कहा कि मंदिर को तोड़ने की मांग कुछ असामाजिक तत्वों द्वारा सिर्फ केन्द्र सरकार की छवि को खराब करने के लिए की गई थी।❖ **लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।**

बड़ा खुलासा! कर्नाटक में धर्म परिवर्तन पर कर्नाटक सरकार ने बांटे करोड़ों

धर्मनिरपेक्षता की बात करने वाली कांग्रेस पार्टी विवादों में घिरती नजर आ रही है। जैसा कि सभी को पता है भारत में ईसाई धर्म को बढ़ावा देने के लिए विदेशों से कई मिशनरीज संचालित हैं। कहा जाता है कि ये हिन्दू धर्म के लोगों को ईसाई धर्म में परिवर्तन का भी काम करते हैं। इसके लिए ये मिशनरीज उनके धर्म की कई तरह की बुराईयां आदि करते हैं। इसको लेकर एक आरटीआई में चौंकाने वाला खुलासा हुआ है। आरटीआई से यह खुलासा हुआ कि राज्य कर्नाटक में सिद्धारमैय्या की सरकार ने बीते कुछ समय में ईसाई संस्थाओं को करोड़ों रूपए दान किए हैं जिस पर यह सवाल उठ रहा है कि क्या कर्नाटक में सरकार ईसाई धर्म का बढ़ावा दे रही है। ये पैसे राज्य में बने चर्च की मरम्मत और सौंदर्यीकरण के नाम पर दिए गए हैं। साथ ही इसके अलावा एक बड़ी रकम नए चर्च और क्रिश्चियन कम्युनिटी हॉल बनाने के लिए दी गई है, जबकि कानून के अनुसार कोई भी सरकार धर्म के लिए इस तरह से पैसे नहीं दे सकती है। इसे संविधान का उल्लंघन माना जाता है। लेकिन खुद को सेकुलर पार्टी बताने वाली पार्टी में कहीं ऐसा तो नहीं कि ईसाई संस्थाओं की जेब भरने का काम किया जा रहा है। वहीं अगर बात वर्ष 2013-14 की करें तो कर्नाटक सरकार ने राज्य के 134 गिरजाघरों को 12.30 करोड़ रूपए दिए। वर्ष 2014-15 में 125 चर्चों को 16.56 करोड़ रूपए सरकारी खजाने से दिए गए। जबकि 2015-16 में चर्च की मरम्मत पर 15 करोड़ रूपए बांटे गए। पिछले तीन साल के अंदर कांग्रेस सरकार ने चर्च को करोड़ों रूपए बांटे। वहीं, जहां तक कर्नाटक सरकार का सवाल है उसने राज्य के कई हिन्दू मंदिरों की करोड़ों की सम्पत्ति सील कर रखी है। ऐसे में इस आरटीआई में कई बड़े खुलासे किए गए हैं जो कांग्रेस सरकार को मुसीबत में डालते नजर आ रहे हैं। फिलहाल तो इस खुलासे पर कांग्रेस की ओर से कोई पक्ष नहीं रखा गया है लेकिन विपक्ष इस पर सख्त रूख अपना सकती है। ❖

साभार : महाकौशल संदेश

MAHARAJA AGRASEN UNIVERSITY

UGC APPROVED

Spark... The Change

Atal Shiksha Kunj, Kalujhanda Near Barotiwala, Baddi, Distt. Solan (HP)

❖ BEST UNIVERSITY OF YEAR 2015 IN THE CATAGORY "RESEARCH & DEVELOPMENT" ADJUDGED BY HIGHER EDUCATION REVIEW

❖ WINNER OF CCI TECHNOLOGY EDUCATION EXCELLENCE AWARD 2014 COMFORT BY GUJRAT TECHNOLOGICAL UNIVERSITY, GUJRAT

STRENGTHS OF THE UNIVERSITY

- All courses are as per UGC nomenclature and approved by respective regulatory bodies
- Choice Based Credit System (CBCS)
- Member: Association of Indian Universities (AIU)
- Highly Accomplished Faculty
- Regular Faculty Development Programmes
- Regular Guest Lectures by Experts from reputed Universities/ Industries
- Best exposure to National and International Seminars
- Industry Oriented Curriculum and regular Industrial Visits
- Wi-Fi Enabled Green Campus
- AC Class Rooms, Labs, Libraries and Seminar Halls etc.
- Amphitheatre and Auditorium
- Separate Hostel for Boys and Girls
- Fee Concessions/ Scholarships
- Rich Library Resources
- Medical Centre, Cafeteria, A.C Transport and ATM Facility
- Education Loan facility from Banks
- Best Placement and strong Corporate tie-ups
- Sports and Gym Facilities for Boys and Girls
- Summer Classes for the students needing additional academic support
- EWS families from surrounding areas under Corporate Social Responsibility (CSR) Project.

***Scholarship upto 50% is available for deserving candidates, for details please visit our website.**

COURSES

Ph.D : ➢ Management, Travel & Tourism, Physics, Chemistry, Maths, English, Law, Environmental Sciences, ECE, ME, EEE

UNDER GRADUATE COURSES :

➢ B.Tech (CSE, ECE, CE, ME, EEE) (AICTE approved), LEET
➢ Bachelor in Architecture (Approved by COA)
➢ LLB, BA LLB (Hons.) (Approved by BCI)
➢ B.Com ➢ B.Com (Hons) ➢ BBA, BBA (Tourism & Travel)
➢ Bachelor in Hotel Management & Catering Technology
➢ B.Sc (Medical/Non-Medical)
➢ B.Pharm, D.Pharm
➢ BA (Journalism) ➢ Bachelor of Fine Arts (BFA) (4 Years)

POST GRADUATE COURSES :

➢ M.Tech (CSE, ECE, CE, ME, EEE)
➢ M.Com ➢ MBA (Master of Business Administration)
➢ MTTM (Master of Tourism & Travel Management) ➢ LLM
➢ M.Sc (Physics/Chemistry/Mathematics/Environmental Sciences/Bio-Technology/ Forensic Sciences)
➢ MA (English) ➢ MA (Journalism)
➢ Master of Fine Arts (Applied Arts/Painting/Sculpture) (2 Years)

MAIT: 15th All India rank in Engineering Including IITs & IIITs By DATAQUEST Survey 2013 Delhi Campus

Admission Open 2016-17

Admission Helpline: 093180-29217, 18, 32, 31, 35, 38, 39, 41, 45,
Website: www.mau.ac.in, Email : admission@mau.ac.in

The touch of pink is the touch of health.
As we grow into a complete healthcare company, we work to bring people better lives and better futures with advanced healthcare products and services.
From innovative contraceptives to hospital equipment, healthcare services and pharma products to public healthcare programs, we're doing all it takes to make every generation glow with the touch of pink, the touch of good health.
www.lifecarehll.com
HLL Lifecare Limited
Innovating for Healthy Generations
Contraceptives | Surgical and Hospital Products & Equipments | Medical Infrastructure Projects | Women's Health Care | Diagnostic Services | Vaccines
Rapid Test Kits | Natural Health Care Products | Procurement and Consultancy Services | Social and Health Care Franchising
Condom Promotion and AIDS Prevention Programs | Hospitals and Mobile Clinics | Public Health Program Implementation and Technical Support for NGO's

प्रेम

प्रेम-मंदिर
धरती मानो
प्रेम महिमा
तुम बखानो।
प्रेम अस्त्र है
शक्तिमान
प्रेम से बढ़
कौन बलवान?
प्रेमवश हम
बनते मित्र
प्रेम-माया
बड़ी विचित्र।
प्रेम कराए
अच्छे काम
प्रेम-डोर तुम
लेना थाम।
प्रेम साध्य
प्रेम साधन
प्रेम-प्रसून
खिलें मनभावन।
प्रेम गंगा
जहां है बहती
ऋद्धि-सिद्धि
वहां है रहती।
नहीं प्रेम में
भय-छिपाव
प्रेम जगाए
अद्‌भुत चाव।
प्रेम मग्न जो
करता काज
मिलता उसको
सुन्दर ताज।
कण्ठ में जिसके
प्रेम-तराना
पाता सुख है
वह तो नाना।
कहे 'प्रसाद'
प्रेम अनमोल
बोलो तुम भी
प्रेम के बोल।

. . .रामप्रसाद शर्मा,
कांगड़ा

नासमझ दिन में भी सोता रहा

मक्कार आगे बढ़ता रहा।
गरीब पीछे हटता रहा
गांव लुटता रहा, शहर सजता रहा।
कोठियां बनती रहीं, कारें बढ़ती रहीं।।
ज़मीन ज़र ज़ोरू का जोड़ होता रहा।
गरीब तो गरीब बस रोता रहा।।
सब्ज बाग के भ्रम जाल में खोता रहा।
हर बार चुनाव में दिशा भ्रमित होता रहा।।
वह बेचारा किस्मत का मारा-मारा!
शराब की प्याली में मदहोश खोता रहा।।
केवल एक रात की दिवाली मनाई तूने।
उम्र भर बदकिस्मती को तू रोता रहा।।
यहां हर चीज बड़ी अजीब है।
नासमझ दिन में भी सोता रहा।।

. . .शास्त्री दीनानाथ गौतम

पैगाम

जिस दिन तुम्हे लगे,
कि मां-बाप बूढ़े हो गए हैं,
तो समझदारी का परिचय देते हुए,
उन्हेंसमझने की कोशिश करना।
अपनी परेशानियों में अगर,
भूल से भी उनसे कोई भूल हो जाए,
तो गुस्सा करने की बजाए,
अपने बचपन की शरारतें याद करना।
उम्र के उस दौर में अगर,
वो तुम्हारी रफ्तार से चल न पाएं,
तो उनका सहारा बन,
अपना लड़खड़ाता पहला कदम याद करना।
उनकी कोई इच्छा कोई चाहत अगर,
बेवजह सी लगती हो,
तो पेट काटकर पूरी की गई,
तुम्हारी ख्वाहिशों को याद करना।
उनके ही बनाए हुए घर में अगर आज,
उन्हें कोई बिस्तर नसीब नहीं होता,
तो अपनी मां की नरम गोद,
और बाप की बाहों के झूले को याद करना।
उन्हें मां-बाप कहने में अगर,
शरम आती हो या कोई एतराज हो,
तो अपनी रगों में बहते
अपने बाप के खून-मां के दूध को याद करना।
जमीन-जायदाद को लेकर अगर,
उनके आंखे मूंदने का इन्तजार कर रहे हो,
तो कफन में जेब नहीं लगी है,
न लगेगी, मेरे इस पैगाम को याद रखना।।

राजेन्द्र हाण्डा
साभार: त्रिकुटा संकल्प

खाद्य एवं पेय पदार्थों में खतरनाक रसायन

- डॉ. किशन कछवाहा

खाद्य एवं पेय पदार्थों में जानलेवा रसायन (जहर) की मिलावट घटने के बजाय अपने चरम पर पहुंच चुकी है जहां पर असली नकली का भेद करना भी मुश्किल हो गया है। आम आदमी से लेकर सम्पन्न परिवार तक इन धीमे जहर वाली खाद्य वस्तुओं के सेवन से शायद ही बच पाता हो। पूरा पैसा देने के बाद भी ये स्वास्थ्य के लिए भयंकर हानिकारक वस्तुएं बेरोकटोक डग-डग पर बेची जाती देखी जा सकती हैं। यह विवशता है या जानबूझकर आत्महत्या की और बढ़ते स्वीकार्य कदम हैं? मिलावटी हानिकर वस्तुओं की जांच पड़ताल के लिए सरकारी दफ्तर हैं और एजेंसियां फिर भी प्रश्न उठता है- कितने कारगर हैं उनके प्रयास? दुकानदारों और उत्पादक संस्थाओं की इन कारगुजारियों पर कब लगाम कसी जाएगी?एक ओर व्यक्ति सुरसा के मुंह की तरह बढ़ती मंहगाई से त्रस्त हैं दूसरी ओर मिलावट खोरों, भ्रष्ट अधिकारियों और जांचकर्ताओं के नापाक गठबंधन ने इसे लाईलाज बीमारी बना दिया है। परिणामस्वरूप खाद्य सामग्री के रूप में कैंसर जैसी खतरनाक बीमारियों को घर के दरवाजे के भीतर आसानी से प्रवेश कराया जा रहा है।

मैगी और ब्रेड में मिलाए जाने वाले जानलेवा रसायनों की चर्चा मीडिया के माध्यम से हो चुकी है। प्रख्यात चिकित्सक से लेकर गांव के वैद्य भी हरी ताजी सब्जियों और फलों के सेवन की सलाह देते हैं लेकिन क्या आज जो फल और सब्जियां बाजार में बिक रहे हैं उनका उपयोग पूरी तरह से निरापद है- क्या कोई ऐसी गारंटी दे सकता है?सब्जी उत्पादन और फलों को पकाने के लिए जिन हानिकारक रसायनों का उपयोग किया जाता है, क्या वे सब नुकसान रहित है? औषधियों, नमक मिर्च, हल्दी आदि दैनिक उपयोग में आने वाले मसाले, दूध, खोया, पनीर आदि का तो और भी बुरा हाल है।

त्यौहारों के अवसरों पर मिठाई की दुकानों पर भले ही कभी कभार छापा मारी हो जाती हो वरन् सालभर सब कुछ सामान्य तरीके से चलता रहने वाला व्यवसाय बना हुआ है। दूध की उपयोगिता से सब अवगत हैं फिर शिशुओं, बच्चों से लेकर वृयोवृद्ध व्यक्तियों के लिए जो दूध बाजार में उपलब्ध है क्या वह मानक स्तर का है। दूध की मात्रा बढ़ाने के लिए दुधारू पशुओं को ऑक्सीटोन जैसे इन्जेक्शन लगाए जाते हैं। वह दूध स्फूर्तिदायक और ताकत देने वाला कैसे हो सकता है? विशेषज्ञों का मानना है कि ऐसे दूध के इस्तेमाल से कई प्रकार की बीमारियों की आशंका बनी रहती है। आम, पपीता, अंगूर, तरबूज आदि फलों का सेवन भी खतरे से खाली नहीं है। उन्हें पकाने, आकार बढ़ाने, रंग चमक और मिठास बढ़ाने के लिए उनमे हानि पहुंचाने वाले रसायनों का प्रयोग किया जाता है जिनके उपयोग से लीवर, किडनी, आई.टी. ब्लाकेज, उच्च रक्तचाप, गठिया, अल्सर और कैंसर जैसी घातक बीमारियों का सामना करना पड़ सकता है। नकली दूध, खोया और पनीर के गोरखधंधे को दूरदर्शन के अनेक चैनलों पर देखा जा चुका है। अनाज और दालों में प्रयुक्त कीटनाशक और जहरीले पॉलिश का तो पहले से ही उपयोग होता आ रहा है। अब नए नए विष इस क्रम में जुड़ते चले आ रहे हैं। आम आदमी की तो मजबूरी है कि जो बाजार में मिले उसे खरीदे, लेकिन शासन की भी तो जिम्मेदारी बनती है कि वह ऐसी व्यवस्था करे जिससे आम जनता को नुकसान रहित वस्तुएं सरलता से उपलब्ध हों। ''दौर है मिलावट कर, हर चीजों में मिलावट है, जिन्दगी के दामन पर मौत की लिखावट हैं।''

अंतर्राष्ट्रीय अध्ययनों में इस बात का उल्लेख आया है कि नल के पानी के मुकाबले बोतलबंद पानी ज्यादा प्रदूषित और नुकसानदेह है। इस व्यवसाय में लगी इकाईयों का व्यवसाय तीस हजार करोड़ से भी ज्यादा का बताया जाता है। इसमें बहुराष्ट्रीय कंपनियों से लेकर स्थानीय स्तर की भी इकाईयां शामिल हैं। आज के समय में अस्वस्थता का मुख्य कारण स्वच्छ पेयजल का उपलब्ध न हो पाना ही है। कालरा, टायफाईड बुखार, पेचिस एवं अन्य दस्त वाली बीमारियां इनमें मुख्य हैं ये जानलेवा भी सिद्ध होती हैं। देशभर में आम जनता को न केवल ठगने वरन् उनके स्वास्थ्य और सेहत के साथ गंभीर खिलवाड़ करने का जो गोरख धंधा चल रहा है इसके लिए जनता को व्यापक स्तर पर जागरूक करने की जरूरत तो है ही साथ ही सरकार को प्रत्येक स्तर पर कड़ी कार्यवाही करने की भी जरूरत है।❖**साभार : वि.सं.कें. रायपुर**

धर्मांधता के प्रचारक

ढाका में भीषण आतंकी हमले के बाद उपजी दहशत से उबरने के पहले ही बांग्लादेश के एक अन्य शहर में ईद के दिन नमाज के मौके पर हमले से यही स्पष्ट हो रहा है कि जिहादी तत्वों का दुस्साहस अपने चरम पर है और अब वे अपने लोगों को भी निशाना बनाने में संकोच नहीं कर रहे हैं। यह ठीक वैसे ही है जैसे इराक, सीरिया, पाकिस्तान, अफगानिस्तान में हो रहा है। भारत के बिल्कुल पड़ोस में ऐसा होना देश की सुरक्षा के लिए एक बड़ा खतरा है। चूंकि यह खतरा पहले से ही महसूस किया जा रहा है इसलिए भारत को और अधिक सतर्कता का परिचय देना होगा-न केवल सीमाओं पर, बल्कि सीमाओं के अंदर भी। ढाका में आतंकी हमले को अंजाम देने वालों के बारे में यह जानकारी सामने आना एक नया संकट है कि उनमें से कुछ कथित इस्लामी प्रचारक जाकिर नाइक के मुरीद थे। बांग्लादेश सरकार को संदेह है कि ढाका के रेस्त्रां में हमला करने वाले जाकिर नाइक के संबोधनों से बहके।

ज़ाकिर नाईक

यह अच्छा है कि महाराष्ट्र सरकार के साथ-साथ केंद्र सरकार की भी आंख खुली, लेकिन आखिर इसके पहले किसी को यह देखने-जांचने की जरूरत क्यों नहीं महसूस हुई कि खुद को इस्लामी उपदेशक बताने वाले जाकिर किस तरह के विचारों का प्रसार कर रहे हैं?जाकिर चाहे जितनी चतुराई से कथित तौर पर इस्लामी शिक्षा का प्रचार-प्रसार करते हों, लेकिन इसमें कोई दो राय नहीं हो सकती कि वह जहालत की वकालत करने के अलावा और कुछ नहीं करते। उनके विचारों का एक मात्र सार यही होता है कि अन्य उपासना पद्धतियों का कोई मूल्य-महत्व नहीं और उन्हें खारिज करना हर मुस्लिम का अधिकार है। ढाका में आतंकी हमले के लिए जिम्मेदार आतंकियों को उकसाने के मामले में अपना नाम सामने आने के बाद जाकिर ने अपनी सफाई में जो कुछ कहा उससे स्वत: स्पष्ट हो जाता है कि उनके उपदेश कितने विषैले और नफरत फैलाने वाले हैं। ओसामा का गुणगान करने के साथ दबे-छिपे सुरों में आतंक की पैरवी करने के कारण कई देशों में प्रतिबंधित जाकिर के मुताबिक अगर कोई पुलिसकर्मी किसी डाकू को भयभीत करता है उस डाकू के लिए तो पुलिसकर्मी आतंकी ही हुआ।

ऐसे मुर्खतापूर्ण किंतु खतरनाक विचारों वाले तथाकथित उपदेशक किसी भी वर्ग और समाज के हितैषी नहीं हो सकते। विडंबना यह है कि जाकिर नाइक को सुनने वाले लोगों की संख्या लाखों में बताई जा रही है। इससे स्पष्ट है कि किस तरह धार्मिक शिक्षा के नाम पर धार्मांधता के प्रसार का काम किया जा रहा है। इससे भी बड़ी विडंबना यह है कि उनको सही रास्ते पर चलते देखने और उन्हें शांतिदूत बताने वाले लोगों की भी कमी नहीं। यह कहना कठिन है कि जाकिर नाइक के खिलाफ कोई कार्रवाई हो सकेगी या नहीं, लेकिन यह स्पष्ट है कि उनके जैसे लोग शांति और सद्भाव के समक्ष एक बड़ा संकट हैं। ऐसे संकट का सही समाधान तभी निकल सकता है जब खुद मुस्लिम समाज जाकिर नाइक सरीखे लोगों का बहिष्कार करे। यह शुभ संकेत है कि उनके विरोध में कई आवाजें मुस्लिम समाज के अंदर से ही उठी हैं।

राजनीतिक एवं धार्मिक नेताओं को ऐसे लोगों को सहयोग-समर्थन और प्रोत्साहन देना होगा। जो बात जाकिर नाइक पर लागू होती है वह उनके जैसे अन्य समुदायों के तथाकथित उपदेशकों पर भी लागू होती है। ऐसे धर्म प्रचारक तब तक फलते-फूलते रहेंगे जब तक राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक क्षेत्र के अग्रणी लोग उनका विरोध करने के लिए आगे नहीं आते। ❖ **साभार: दैनिक जागरण**

भारत माता की जय

- दिलीप धारुरकर

शायद ही दुनिया में ऐसा कोई देश हो जिसके स्वाधीनता के सत्तर साल पश्चात् देश की जय-जयकार के सामने सवालिया निशान लगता हो। शायद ही दुनिया में ऐसा कोई देश हो जिसमें स्वाधीनता संग्राम के मंत्र स्वरूप वंदे मातरम् की घोषणा को दोहराने में लोग विरोध करते हों, जहां पड़ोसी देश से बेरोकटोक आने वाले घुसपैठियों को रोकने हेतु छात्रों को आंदोलन करना पड़े, जहाँ राष्ट्रध्वज की वंदना के लिए सख्ती बरतने की चर्चा होती हो। दुर्भाग्यवश दुनिया में ऐसा एकमात्र देश अपना भारत ही बना हुआ है जहाँ यह सभी अनहोनी जैसी बातें होती है। स्वार्थ, राजनीति और वोट बैंक के लालच ने इस देश के राजनेताओं, विचारकों को इतना निचले स्तर पर ला खड़ा किया है कि देशभक्ति, देशप्रेम का सौदा करने में उन्हे जरा भी हिचकिचाहट नहीं होती है।

'भारत माता की जय', 'वंदे मातरम्' कहते-कहते अनेक क्रांतिकारी देश की आजादी की जंग में फांसी पर झूल गए। सन् 1857 के स्वातंत्र्य समर में क्रांतिकारियों ने औरंगाबाद के नजदीक दौलताबाद के किले में 'भारत माता' की मूर्ति की प्रतिष्ठापना कर स्वाधीनता की शपथ ली और इस संग्राम की शुरूआत की। उन्हें अंग्रेजों ने औरंगाबाद में क्रांति चौक स्थित कालाचबूतरा पर फांसी पर लटकाया। क्या उन्हें कल्पना भी होगी की इसी 'भारत माता' की कल्पना का 160 साल बाद इसी देश में विरोध होगा। कोई कहेगा की 'मेरी गर्दन पर चाकू रखने पर भी मैं भारत माता की जय नहीं बोलूंगा।'

जेएनयू में देश विरोधी नारे लगने के पश्चात् जब रा. स्व. संघ के सरसंघचालक मोहनजी भागवत ने बयान दिया था कि देश के नौजवानों को अब 'भारत माता की जय' कहने के लिए संस्कार देने पडेंगे। लेकिन इसका अर्थ भारत माता की जय बोलने की सख्ती बरतने से जोड़कर मजलिस ए इत्तेहादुल मुसलमीन के नेता असदुद्दीन ओवैसी ने गर्दन पर चाकू रखने पर भी 'भारत माता की जय' नहीं कहूँगा ऐसा बेतुका बयान दे डाला।

स्वाधीनता के पश्चात् पिछले 70 सालों में छद्म सेक्युलॅरिजम ने देशभक्ति से जुड़ी हुई अनेक संकल्पनाओं को विपरीत संदर्भ दिया और देशभक्ति के प्रकटीकरण का खुलेआम विरोध बेशर्मी से करने की मानसिकता को बढ़ावा दिया। देशभक्ति और देशप्रेम के बारे में बेशर्मी भरे बयान देने में गर्व का अनुभव करने तक, ऐसे बयान देने वालों को संरक्षण एवं सम्मान देने तक यह स्तर नीचे गिर गया है। स्वाधीनता संग्राम में जो बातें देशभक्ति की, राष्ट्रीयता की पहचान बनी हुई थी उन्हें विरोध करने में अपना राजनीतिक अस्तित्व ढूँढ़ने की बेशर्मी लोग करने लगे हैं। वंदे मातरम् यह स्वाधीनता संग्राम का मंत्र बन चुका था। लेकिन अब वंदे मातरम् कहने का विरोध होता है। भारत माता की जय इस जयघोष में कहीं भी मूर्ति की कल्पना दूर-दूर तक नहीं थी। यह देशभक्ति भरा जयघोष था। अब कहा जा रहा है कि भारत माता की जय कहना इस्लाम के विरोध में है।

इस देश में अल्पसंख्यकवाद और तुष्टीकरण की राजनीति ने सामाजिक, राष्ट्रीय विषयों के संदर्भ और परिभाषा को उलट कर रख दिया है। स्वाधीनता संग्राम में वंदे मातरम, भारत माता की जय, भगवा ध्वज, शिवाजी जयंती, गणेशोत्सव, हिंदुस्थान ये सब बातें राष्ट्रीय थी जिन्हें अब स्वाधीनता के पश्चात् साम्प्रदायिक कहा जा रहा है।

जेएनयू का विवाद चल रहा था तब एक पाठक का मुझे फोन आया। वह साम्यवादी कार्यकर्ता लग रहा था। मेरे बोलने में हिंदुस्थान यह नाम आते ही उसने फोन पर विरोध प्रकट करते हुए कहा की हिंदुस्थान नहीं भारत कहो। इस देश को भारत यह नाम संविधान में अधिकारिक तौर पर दे दिया है। मैंने उन्हें कहा क्या भारत माता की जय कहने के लिए वे आग्रह करेंगे। तो उनके पास इसका जबाब नहीं था। उन्होनें फोन काट दिया।

सैय्यद शहाबुद्दीन ने राष्ट्रध्वज की वंदना के लिए सख्ती ना बरतने की बात कही थी, अब 'भारत माता की जय' ना कहने की बात ओवैसी जैसे लोगों ने कही है। इस्लाम के रिलीजियस कारणों को आगे रखकर देशभक्ति को दांव पर लगाने की छूट लेने का एक प्रयोग कुछ लोग करना चाहते हैं। धर्मनिरपेक्षता की रट लगाने वाले स्वयं घोषित सेक्युलर भी ऐसे लोगों का पक्ष लेकर मैदान में उतरने लगे हैं। इन लोगों की धर्मनिरपेक्षता की परिभाषा ही अलग है। सभी पंथ, पूंजापद्धति से निरपेक्ष कानून, राजपाट, व्यवस्था होना इनकी दृष्टी से धर्मनिरपेक्षता की परिभाषा नहीं है। इसके संपूर्णत: विपरीत इनकी धर्मनिरपेक्षता का वास्तविक स्वरूप है। इनका कहना है कि, अलग-अलग पूजा पद्धति अनुसार कानून ही अलग-अलग हो,

शेष पृष्ठ 16 पर . . .

बजौरा के दो वैज्ञानिकों ने तैयार की नई वैरायटी कंधारी सीडलैस के आगे फीके पड़े बाकी अनार

देश विदेश में अपनी मिठास बिखेरने वाले हिमाचली अनार की चमक और मिठास और बढ़ने वाली है। कुल्लू जिला के क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र बजौरा के दो वैज्ञानिकों ने 16 साल के कठिन परिश्रम के बाद बागबानों के लिए नई किस्म इजाद कर ली है, जो सबसे स्वादिष्ट किस्मों को मात देगी। कंधारी, भगवा और काबुली किस्मों से तैयार की गई इस संकरित किस्म का नाम कंधारी सीडलैस रखा गया है। नई किस्म अगले साल से बागबानों को उपलब्ध करवाई जाएगी। इस प्रजाति के बारे में अनुसंधान केंद्र के सहनिदेशक डॉ. जयंत कुमार ने बताया कि साल 2000 के दौरान एक प्रजनन कार्यक्रम बजौरा में आरम्भ किया गया था। इसके तहत कंधारी और काबुली जैसी किस्मों की गुणवत्ता, रंग व आकार वाली किस्म के प्रजनन का निर्णय हुआ था।

उन्होंने बताया कि इसके लिए अनार के छह हजार संकर को इसमें लिया गया और तीन गुणा दो की दूरी पर लगाया गया। इनमें से कंधारी, काबुली और एक्स भगवा संकरों से तैयार उत्पाद को सबसे उपयुक्त पाया गया। इस किस्म के फल में फटने की समस्या भी कम है और लंबी दूरी तक इसे ट्रांसपोर्ट किया जा सकता है। छह साल का पेड़ 40 किलोग्राम तक फल देता है। प्रदेश के मध्यम ऊंचाई वाले इलाकों में अनार की फसल कुछ सालों में बड़े पैमाने पर लगी है और ऐसे में ये किस्म बागवानों के लिए अहम साबित होगी। नई किस्म को सफलतापूर्वक ईजाद करने पर वैज्ञानिकों और बागवानी विशेषज्ञों के साथ प्रगतिशील बागबानों ने भी खुशी जताई है और इनकी मेहनत को काबिलेतारीफ बताया है। कुल्लू के किसान-बागवान संगठन का कहना है कि इससे बागवानों की आर्थिकी मजबूत होगी, तो लोगों को भी रसदार और बेहतर फल चखने को मिलेगा।

वैज्ञानिकों की 16 साल की मेहनत

नई किस्म ईजाद करने में डॉ. जयंत कुमार और डॉ. किशोर खोसला को करीब 16 साल लगे, जिसके बाद बागवानी विश्वविद्यालय ने किस्म को सही करार दिया है। बजौरा के वैज्ञानिक इससे पहले कंधारी जैसी किस्म भी प्रदेश के बागवानों को दे चुके हैं, जो प्रदेश के बागवानों के साथ इटली के बागबानों को भी रास आ चुकी है।

नई किस्म की क्या है खासियत

नई किस्म का फल चिकनी और चमकदार छील के साथ बहुत ही आकर्षक गहरे लाल रंग का है। इसका एरियल चेरी लाल रंग है और बीच मुलायम है जो प्रसंस्करण के लिए भी प्रयोग में लाया जा सकता है। इसका दाना स्वादिष्ट, जिसमें 150 बी, शुगर 1.3 प्रतिशत, अम्लता 0.52 प्रतिशत जैसे रासायनिक गुण मौजूद हैं। वजन 225 से 250 ग्राम के बीच है। ❖**साभार : दिव्य हिमाचल**

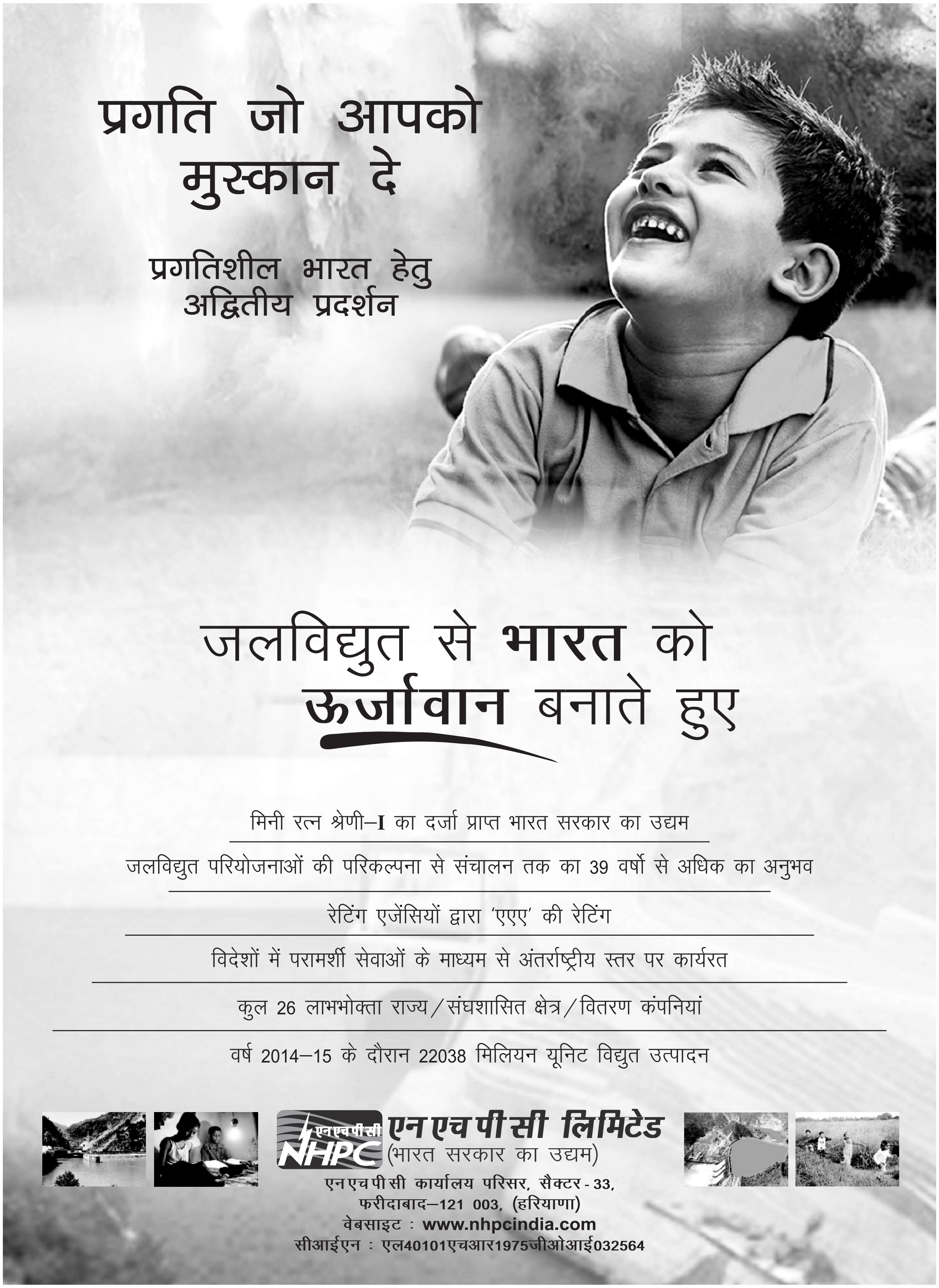

प्रगति जो आपको मुस्कान दे
प्रगतिशील भारत हेतु अद्धितीय प्रदर्शन
जलविद्युत से भारत को ऊर्जावान बनाते हुए
मिनी रत्न श्रेणी–I का दर्जा प्राप्त भारत सरकार का उद्यम
जलविद्युत परियोजनाओं की परिकल्पना से संचालन तक का 39 वर्षो से अधिक का अनुभव
रेटिंग एजेंसियों द्वारा 'एएए' की रेटिंग
विदेशों में परामर्शी सेवाओं के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कार्यरत
कुल 26 लाभभोक्ता राज्य/संघशासित क्षेत्र/वितरण कंपनियां
वर्ष 2014–15 के दौरान 22038 मिलियन यूनिट विद्युत उत्पादन
एनएचपीसी NHPC
एनएचपीसी लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)
एनएचपीसी कार्यालय परिसर, सैक्टर - 33,
फरीदाबाद–121 003, (हरियाणा)
वेबसाइट : www.nhpcindia.com
सीआईएन : एल40101एचआर1975जीओआई032564

महिला जगत

वीरांगना तीलू

- कृष्ण चंद्र महादेविया

उत्तराखण्ड के टिहरी और उत्तरकाशी के ग्रामीण अंचल में प्रसिद्ध वीरांगनाओं में से तीलू रौतेली की कहानियां अत्यन्त प्रसिद्ध हैं। अनेक युद्धों में तीलू रौतेली ने शत्रुओं को नाको चने चबवा दिए थे किन्तु कभी थकी न थी। आज अंतिम भयंकर युद्ध में आतताइयों का भीषण संहार कर लौटते हुए उसे कुछ थकान अनुभव हुई तो उसने अपने अंगरक्षकों, विश्वास पात्रों और सैनिकों को वापिस अपने राज्य की छावनी भेज दिया था। वह जानती थी कि आज के बाद कोई भी शत्रु उसके राज्य को आंख उठाकर देखने तक की हिम्मत भी जुटा न पाएगा। अपने गांव से फर्लांग भर की दूरी पर नदी के किनारे विशाल पेड़ के नीचे सुस्ताने और नदी में तैरती मच्छलियों को देखने वह रूक गई थी। पन्द्रह-सोलह वर्ष की यह नवयुवती पुरूष सेना नायक के वेश में थी। तलवारबाजी और छापामार युद्ध में महारत हासिल करने वाली तीलू रौतेली ने गांव के ही एक वीर तलवारबाज और छापामार युद्ध में पारंगत वृद्ध से शस्त्र संचालन, युद्ध कौशल और छापामारी का गहन और कड़ा प्रशिक्षण लिया था। तीलू ने पेड़ के नीचे अपने जूते उतारे और शस्त्र भी एक ओर रखे। पीठ को पेड़ से टिका कर सुस्ताते हुए बीती यादों में खो गई।

''मांऽऽऽ! मैं मेले जा आऊं?....... दोनों सहेलियां भी साथ हैं।'' ''अभी तुम्हारे पिता और भाई की श्मशान में राख ठण्डी भी नहीं हुई और तुम मेला देखने जाना चाहती हो?तुम जैसी कायर सन्तान को पैदा कर मैंने अच्छा नहीं किया।''मांऽऽऽ!! मैं कायर नहीं हूं।

''कायर नहीं, तो फिर अपने देश की रक्षा के लिए तुमने क्या किया?अपने भाई और पिता के हत्यारों विदेशी सेनापति और सेना की गर्दने क्यों नहीं उड़ा दी?.... बोल तीलू, मेरे दूध में ऐसी क्या कमी रह गई?'' मां कहने के साथ ही चीत्कार कर रो पड़ी थी।

''मां, आप दुःखी मत हों।......... मैं घर अब तभी लौटूंगी, जब अपने मुल्क से दुश्मनों का सफाया कर दूंगी। मैं अपने भैया और पिता की हत्या का बदला अवश्य लूंगी मां।'' तीलू रौतेली मां के सामने प्रतिज्ञा कर गांव के वीर वृद्ध तलवार बाज के पास चली गई थी। तीलू रौतेली के साथ उसकी हमउम्र दो और सखियां साथ थीं। तीनों ने पुरूष वेश में युद्ध का प्रशिक्षण लिया था और सदैव पुरूष वेश में ही रहती थीं। समस्त युद्धों, छापामार कार्यवाहियों में किसी को भनक तक न लगी कि वे युवतियां थीं। राजा ने उन्हें सेनानायकों की पदवी से नवाजा था। तीलू रौतेली ने सुख की आह भरी और बुड़बुड़ाई- मां, अपने देश से मैंने शत्रुओं को मौत की नींद सुलाकर अपने पिता और भाई का बदला भी चुका दिया है। जरूर कुछ कायर घायल होने पर भी जान बचाकर भाग गए। अब आपके पास मां, आपकी यह बेटी आ रही है।'' तीलू उठी। उसने इस्पाती टोप, जिरह-बख्तर खोलकर शस्त्रों के पास पेड़ के नीचे रखे फिर सिर को झटका देकर लम्बे बालों को खोल लिया। अब वह नदी में तैरना और स्नान करना चाहती थी। जान बचाने झाड़ी के पीछे छिपे और टांग में घाव खाए शत्रु सैनिक की अचानक नजर तीलू रौतेली पर पड़ी। वह आश्चर्य से उसे देखता रह गया था। घायल होने पर भी उसकी शत्रुता और पुरूष अहंकार जाग उठा। ''अरे! वह तो लड़की है। इसने गाजर-मूली की तरह काट दिया हमें?''

शत्रु सैनिक का शैतानी दिमाग हरकत में आ गया था। जब तीलू रौतेली अपनी धुन में मस्त नदी में उतरने लगी तो वह सैनिक दबे पांव उसके पीछे लपका और धोखे से तुरन्त उसकी गर्दन पर तलवार से बार कर दिया। वीरांगना तीलू रौतेली की गर्दन धड़ से अलग हो गई। कायर शत्रु सैनिक वहां से लंगड़ाता हुआ सुरक्षित स्थान की ओर भाग चला। तीलू रौतेली को अकेला छोड़ देने पर एकाएक उसकी सहेली सैनिक वेश में उसकी ओर लौटने लगी थी। उसकी निगाह सिर पर पांव रखकर भागते लंगड़े शत्रु सैनिक पर पड़ी। उसने तुरन्त निशाना साधा। तीर सीधे खचाक से उसकी टांग में घुसा और सैनिक कराह के साथ गिर पड़ा। सैनिक वेश में युवती तुरन्त उसके पास पहुंची और तलवार उसकी गर्दन पर रखते भागने का कारण पूछा तो उसने सब कुछ उगल दिया।

तीलू की सहेली आक्रोश से भर उठी। उसने एक झटके से शत्रु की गर्दन उड़ा दी और तीलू की ओर दौड़ पड़ी। उसने तुरन्त तीलू रौतेली की गर्दन उसके धड़ से चिपकायी। वह अपने को सम्भाल नहीं पाई और दहाड़े मार कर रोने लगी। उसका रोना सुनकर नदी के उस पार से ग्रामीण उसकी ओर दौड़ पड़े। शीघ्र ही आग की तरह तीलू के शहादत की खबर उसे गांव भी पहुंची। उसकी मां के साथ पूरा गांव रोता-रोता शहादत स्थल की ओर दौड़ चला। अब जिसे भी समाचार मिलता वे सभी उम्र के लोग रोते-रोते दौड़-दौड़ कर आने लगे थे। सबने देखा था तीलू रौतेली के चेहरे पर विजयी मुस्कान रेंग रही थी। ❖**लेखक प्रसिद्ध स्तंभकार हैं।**

वियतनाम में शिवाजी महाराज की प्रेरणा

विएतनाम। इस छोटे से देश ने अमेरिका जैसे शक्तिशाली देश को धूल चटाई थी। लगभग 20 वर्ष चले इस युद्ध में अमेरिका परास्त हुआ था। विजय के बाद विएतनाम के राष्ट्राध्यक्ष से पत्रकारों ने प्रश्न पूछा कि अमेरिका को कैसे हरा पाए? युद्ध कैसे जीता? इस पर उन्होंने उत्तर दिया, 'वास्तव में अमेरिका-जैसी महाशक्ति को हराना असम्भव है, लेकिन उसी महाशक्ति से जूझने के लिए मैंने एक महान् राजा का चरित्र पढ़ा। उससे मिली प्रेरणा से मैंने युद्ध नीति बनाई, उसी को लागू किया और आसानी से विजय पाई। आगे पत्रकारों ने पूछा, कौन था वह महान् राजा? मित्रो! मैंने जब इसका उत्तर पढ़ा तो मेरा सीना गर्व से चौड़ा हो गया, जैसा अब आपका भी होगा..... तो इस प्रश्न पर विएतनाम के राष्ट्राध्यक्ष अपने स्थान पर खड़े हुए और उन्होंने आदर से कहा, 'छत्रपति शिवाजी महाराज।' आगे उन्होंने कहा कि 'यदि ऐसा राजा हमारे देश में पैदा होता तो आज हम पूरी दुनिया पर राज करते।' कुछ वर्षों बाद विएतनाम के उन राष्ट्राध्यक्ष महोदय की मृत्यु हुई। उन्होंने अपनी समाधि पर जो वाक्य लिखने के लिए कहे, वे थे- 'शिवाजी महाराज का एक सैनिक समाधिस्थ हुआ।' ये वाक्य हम आज भी इनकी समाधि पर देख सकते हैं। कुछ वर्षों के बाद विएतनाम की विदेश मंत्री का भारत का दौरा हुआ। तय राजकीय कार्यक्रम के अनुसार उन्हें लाल किला और गांधी जी की समाधि दिखाई गई, लेकिन ये दिखाते समय उन्होंने पूछा- 'शिवाजी महाराज की समाधि कहां है?' तब भारत सरकार सन्न रह गई और उत्तर दिया गया- 'रायगढ़।' विएतनाम की विदेश मंत्री रायगढ़ पहुंचीं और शिवाजी महाराज की समाधि का दर्शन किया। उसके बाद उन्होंने रायगढ़ की मिट्टी उठाई और अपने बैग में डाल ली। इसका कारण पत्रकारों द्वारा पूछे जाने पर मंत्री महोदय ने कहा कि यह मिट्टी शूर-वीरों की है। इसी मिट्टी में छत्रपति शिवाजी जैसे महान् चरित्रवान् राजा का जन्म हुआ है। अपने देश वापस जाकर यह मिट्टी मैं अपने देश की मिट्टी में मिलाऊंगी, जिससे हमारे देश में भी ऐसे ही शूर-वीर पैदा हों।❖**साभार: कल्याण**

सेवा का अनोखा तरीका एक आदमी ने साफ कर दी 160 कि.मी. लम्बी नदी

500 साल पूर्व गुरू नानक देव को प्राप्त हुआ था आत्मज्ञान। पंजाब के होशियारपुर में बहती काली बीन नदी कभी बेहद प्रदूषित थी। लोग उसको नदी नहीं नाला मानते थे, नहाना छोड़िए 40 गांवों के लोग उसमें कूड़ा डालने लगे थे लेकिन एक व्यक्ति की पहल ने उस नदी को स्वच्छ करवा दिया। वह शख्स कोई और नहीं पर्यावरण कार्यकर्ता और सिख धर्मगुरू बलवीर सिंह सींचेवाल हैं। उन्हें इस काम के लिए 'हीरोज ऑफ एन्वायरनमेंट' की लिस्ट में शुमार किया गया।

ऐसे साफ की नदी

40 गांव की नालियों का गंदा पानी लोग नदी में मिलाते थे। इससे यह एक गंदे नाले में बदल गई थी। नतीजतन आस-पास के खेतों को पानी नहीं मिल पाता था। 2000 में पर्यावरण कार्यकर्ता बलबीर सिंह सीचेवाल ने इस नदी को साफ करने का काम शुरू किया था। उन्होंने अपने साथी और सहयोगी स्वयंसेवकों के साथ मिलकर सबसे पहले इसके तटों का निर्माण किया और नदी के किनारे-किनारे सड़कें बनाई। सीचेवाल ने लोगों के बीच जनजागृति अभियान चलाया। इसके तहत लोगों से अपना कूड़ाकरकट कहीं और डालने को कहा गया। नदी में मिलने वाले गंदे नालों का रूख मोड़ा गया। और सबसे बड़ी बात, नदी के किनारे बसे लोगों को इसकी पवित्रता को लेकर जागरूक किया गया। जिस नदी के किनारे खड़े होने पर लोगों को नाक पर रूमाल रखना पड़ता था, अब उसी नदी के किनारे लोग पिकनिक मनाते हैं।

क्यों खास है यह नदी

काली बीन नदी होशियारपुर जिले में 160 किलोमीटर क्षेत्र में बहती है। यह वही काली बीन नदी है, जिसके किनारे 500 साल पहले गुरू नानक देव को आत्मज्ञान प्राप्त हुआ था और वे नानक से गुरू नानक के रूप में पहचाने जाने लगे थे। ❖**साभार: केशवसृष्टि समाचार**

महाभारत कालीन इस देश में बचे हैं मात्र 220 हिंदू परिवार

अफगानिस्तान में हिंदू परिवारों की संख्या में भारी गिरावट हो रही है। नेशनल काउंसिल ऑफ हिंदू एंड सिख की हाल ही में जारी रिपोर्ट को मानें तो अफगानिस्तान में 220 से भी कम हिंदू और सिख परिवार बचे हैं। गौर करने वाली बात यह है कि सन् 1992 में यहां मौजूद हिंदू-सिख धर्म के अनुयायियों की संख्या 2,20,000 थी। अफगानिस्तान, द्वापरयुग में भारत का अभिन्न अंग था। जिसके प्रमाण यहां वर्तमान में मौजूद हैं। महाभारत और रामायण में ऐसे कई उदाहरण मौजूद हैं, जिनसे ज्ञात होता है कि अफगानिस्तान भारत का अभिन्न अंग हुआ करता था। यहां सनातन धर्म पल्लवित था, बाद में यह देश बुद्ध का देश बना। इस देश में प्राचीन काल से ही शिव-पार्वती की पूजा होती आ रही है। बाद में बौद्ध धर्म के जन्म के बाद यहां बौद्ध संप्रदाय का आधिपत्य रहा। ❖ **साभारः नई दुनिया**

पिचाई समेत चार को अमेरिकी गौरव अवार्ड

भारतीय मूल के चार अमेरीकियों को महान आव्रजक-अमेरिका का गौरव (ग्रेट इमीग्रेंट्स-द प्राइड ऑफ अमेरिका) पुरस्कार दिया जाएगा। यह पुरस्कार वार्षिक तौर पर दिया जाता है। दुनिया के अन्य देशों से अमेरिका पहुंचे पुरस्कृत होने वाले 42 लोगों में भारतीय मूल के गूगल के सीईओ सुंदर पिचाई भी शामिल हैं। अन्य भारतीयों में पीबीएस न्यूजऑवर के एंकर व वरिष्ठ संवाददाता हरी श्रीनिवासन, मैकिंसे एंड कंपनी के चेयरमैन विक्रम मल्होत्रा और लेखक व आलोचक भारती मुखर्जी हैं। कार्नेगी कॉर्पोरेशन की ओर से ये पुरस्कार न्यूयॉर्क में 30 जून को दिए गए। जिन 42 लोगों को पुरस्कारों के लिए चुना गया है, वे 30 भिन्न देशों के हैं। कार्नेगी कॉर्पोरेशन के अध्यक्ष वर्तन ग्रेगोरियन के अनुसार ये लोग उन लाखों आव्रजकों का प्रतिनिधित्व करते हैं जो अमेरिका में आर्थिक कारणों, शिक्षा प्राप्त करने, राजनीतिक/धार्मिक शरण लेने या सुरक्षा की दृष्टि से आए।❖ **साभारः दैनिक जागरण**

अमरीका ने महाभारत काल के भारत का मानचित्र जारी किया

अमेरिका के एक प्रमुख पुस्तकालय ''लायब्रेरी ऑफ कांग्रेस'' ने पिछले दिनों महाभारत के समय का भारत का मानचित्र जारी किया है। यह मानचित्र अंग्रेजों के शासन काल में पूना में तैयार किया गया था। वहां से द्वितीय विश्व युद्ध के समय यह मानचित्र अमरीका पहुंचा। यह नक्शा एकदम सटीक है तथा महाभारत में वर्णित स्थानों और घटनाओं से मेल खाता है। अमरीका के इतिहासकारों ने भी इसको प्रमाणित माना है। इस नक्शे में अफगानिस्तान से दक्षिण-पूर्व एशिया तक के भूभाग को भारत का हिस्सा बताया गया है। आज के म्यांमार, तिब्बत, थाईलैण्ड, कम्बूचिया, मलेशिया, वियेतनाम और इंडोनेशिया तक के क्षेत्र को इस मानचित्र में भारत का अंग दिखाया गया है। अफगानिस्तान के पर्वतीय क्षेत्र को बल्कि और आगे के क्षेत्र को काम्बोज और गांधार नाम इसमें दिया गया है। आज जो कर्नाटक के रूप में जाना जाता है उसे किष्किन्धा के रूप में दिखाया।❖

समाज को असंस्कृत कर रहे हैं विज्ञापन

- टेक चंद ठाकुर

दूरदर्शन जब से हमारे समाज का अभिन्न अंग बन गया है तभी से इसे उत्पादकों ने अपने उत्पादनों को विज्ञापित करने का माध्यम बनाया है। विज्ञापन भले ही कितना भी मंहगा क्यों न हो इसकी भरपाई आसानी से हो सकती है, अपने उत्पादों को बेचकर। दूरदर्शन को विज्ञापन के माध्यम से होने वाले मुनाफे में पिछले एक दशक में पन्द्रह गुना मुनाफा हो गया है। उत्पादकों को इसका कितना फायदा हुआ होगा, इसका अनुमान लगाना कठिन न होगा। किसी भी वस्तु की मार्केटिंग एक कला है, जिसमें विज्ञापन उसका एक अभिन्न अंग है। दूरदर्शन पर विज्ञापनों से समाज में एक उपभोक्ता संस्कृति पैदा हो गई है। लेकिन इससे भी अधिक चिंताजनक बात यह है कि मुनाफा कमाने के लिए विज्ञापनों में हिंसा और नग्नता का प्रयोग बहुत तेजी से बढ़ गया है। यहां तक कि बच्चों के प्रयोग की उपभोक्ता वस्तुएं भी इससे अछूती नहीं रही। यह एक चिंताजनक विषय है। सुपरिचित मीडिया विशेषज्ञ और स्तम्भकार सुधीर पचौरी ने कुछ समय पहले विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के लिए दूरदर्शन के विज्ञापनों में 'उपभोक्ता संस्कृति के रूप' विषय पर तैयार अपनी प्रोजैक्ट रिपोर्ट में यह निष्कर्ष निकाला है।

दूरदर्शन संस्कृति और उत्तर आधुनिक समाज के बारे में कई पुस्तकें लिखने वाले श्री पचौरी ने 270 पृष्ठों की अपनी रिपोर्ट में कहा है कि आज विज्ञापनों के जरिए दूरदर्शन की वार्षिक आय 573 करोड़ रूपए हो चली है। उनके अनुसार 44.8 करोड़ से अधिक लोग इन विज्ञापनों को देख रहे हैं। इन विज्ञापनों के कारण 'उपभोग' का प्रभाव हमारे जीवन पर पड़ रहा है और वस्तुओं की चमक-दमक ने हमें उनके अनुकूल बनाना शुरू कर दिया है जो हमारे जीवन के लिए एक बहुत बड़ा धक्का है। रिपोर्ट के अनुसार विज्ञापन के कारण मर्दों में मर्दानगी, बच्चों की जिद्दें, उनका पेटूपन कुल मिलाकर नए सांस्कृतिक संस्कार को जन्म दे रहे हैं। विशेषकर शहरी मध्यम वर्ग और अधिक पेटू, नृशंस संवेदनाहीन और अकेला हुआ है। इतना ही नहीं युवाओं में बढ़ती हिंसा, स्त्रियों के प्रति अपराध, बाल अत्याचार, बच्चों का घरों से भागना कहीं न कहीं विज्ञापनों के इस प्रपंच से भी जुड़ा है।

दूरदर्शन संस्कृति और उत्तर आधुनिक समाज के बारे में कई पुस्तकें लिखने वाले श्री पचौरी ने 270 पृष्ठों की अपनी रिपोर्ट में कहा है कि आज विज्ञापनों के जरिए दूरदर्शन की वार्षिक आय 573 करोड़ रूपए हो चली है। उनके अनुसार 44.8 करोड़ से अधिक लोग इन विज्ञापनों को देख रहे हैं। इन विज्ञापनों के कारण 'उपभोग' का प्रभाव हमारे जीवन पर पड़ रहा है और वस्तुओं की चमक-दमक ने हमें उनके अनुकूल बनाना शुरू कर दिया है जो हमारे जीवन के लिए एक बहुत बड़ा धक्का है। रिपोर्ट के अनुसार विज्ञापन के कारण मर्दों में मर्दानगी, बच्चों की जिद्दें, उनका पेटूपन कुल मिलाकर नए सांस्कृतिक संस्कार को जन्म दे रहे हैं। विशेषकर शहरी मध्यम वर्ग और अधिक पेटू, नृशंस संवेदनाहीन और अकेला हुआ है। इतना ही नहीं युवाओं में बढ़ती हिंसा, स्त्रियों के प्रति अपराध, बाल अत्याचार, बच्चों का घरों से भागना कहीं न कहीं विज्ञापनों के इस प्रपंच से भी जुड़ा है। ❖

अपने विस्तृत अध्ययन में उपरोक्त रिपोर्ट में श्री पचौरी के अनुसार स्त्री के शरीर की निरंतर नुमाईश या मर्द औरत को बहुत निकट दिखाना अधिकतर लोग आपत्तिजनक मानते हैं। सभी लोग जानते हैं कि बच्चों पर विज्ञापनों का बुरा असर पड़ता है। छोटे बच्चों को विज्ञापन याद रहते हैं। वे उन्हें गाकर व अभिनय करके याद करते हैं, सुनाते हैं। सम्पन्न वर्ग

के बच्चे अंग्रेजी के गीत और अंग्रेजी विज्ञापन पसन्द करते हैं। विशेषकर पांच से दस वर्ष तक के आयु वर्ग के बच्चों को विज्ञापन को देखने और रटने की आदत पड़ गई है। श्री पचौरी का आकलन है कि अर्थशास्त्रियों, अध्यापकों, पत्रकारों और बुद्धिजीवियों का मानना है कि विज्ञापन झूठे मूठे मूल्यों एवं फेंटेसी का प्रचार करते हैं। बुद्धिजीवी वर्ग टेलीविजन और विज्ञापन को भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता के लिए सबसे ज्यादा हानिकारक मानता है।

विज्ञापनों में 83 प्रतिशत हिन्दी भाषा का प्रयोग हो रहा है। इसी प्रकार 17 प्रतिशत अंग्रेजी का। इन विज्ञापनों का सकारात्मक पहलू यह है कि उपभोक्ताओं को सम्प्रदायों के दायरे में नहीं रखा गया, जिससे एक धर्मनिरपेक्ष क्षेत्र का निर्माण हुआ है। विज्ञापन अमीरों के सात मंजिली कोठियों तक पहुंचा है। इसलिए दूरदर्शन एक ऐसे सुपर बाजार में बदल गया है जो प्रायोजकों और विज्ञापनदाताओं के जरिए संचालित होता है। पिछले एक दशक में समाज में उपभोक्ता वस्तुओं की बाढ़ दूरदर्शन पर आने वाले विज्ञापनों और मनोरंजक कार्यक्रमों से भी गहरे रूप से जुड़ी है। यदि दूरदर्शन 1982 में रंगीन न हुआ होता, इसका नेटवर्क इतनी तेज़ी से न फैलता तो ये वस्तुएं भारतीय घरों में इतनी तेज़ी से न घुस पाती जितनी तेज़ी से घुसी हैं। रिपोर्ट में एक अत्यंत दिलचस्प खुलासा यह हुआ है कि आज देश में 71 प्रतिशत लोग विज्ञापनों में विश्वास करते हैं। निम्न मध्य वर्ग से लेकर उच्च मध्यवर्गीय समाज तक इसकी पैठ हो गई है। दो तिहाई लोग विज्ञापनों से प्रभावित होकर वस्तुएं खरीदते हैं। इनमें से 80 प्रतिशत जनता ग्रामीण भी है। केवल 25 प्रतिशत शहरी तथा 16 प्रतिशत ग्रामीण जनता यह मानती है कि विज्ञापन फालतू खरीददारी को बढ़ावा देते हैं यह भी कि कुल उपभोक्ता वस्तुओं की 20 से 25 प्रतिशत खरीददारी गांवों में ही हो रही है। इससे स्पष्ट होता है कि विज्ञापन अब समाज के प्रत्येक वर्ग में अपनी पैठ बना चुका है।

देश में आई नई आर्थिक नीति और वैश्वीकरण की लहर के बाद तो दूरदर्शन की भूमिका में यह परिवर्तन इसलिए आया है कि यह लक्ष्यों से लगभग हट गया है जबकि उसका प्राथमिक उद्देश्य शिक्षा, सूचना एवं स्थान के जरिए विकास है। वास्तव में दूरदर्शन भी जी टीवी, स्टार टीवी, सोनी और इसी प्रकार के दूसरे व्यावसायिक चैनलों के पद्चिन्हों पर चलने लगा है। अपने देश समाज की विशिष्ट परम्पराओं, मान्यताओं और मानबिन्दुओं को ताक पर रखकर यदि पश्चिमी संस्कृति की नकल कर विज्ञापन तैयार किए जाएं तो उपभोक्ता वस्तुओं की बिक्री भले ही हो परन्तु इससे समाज का भला कदापि नहीं हो सकता। श्री पचौरी के इस विस्तृत अध्ययन से इतना सबक तो सीखना ही होगा।

❖ **लेखक सेवानिवृत्त उप-प्राचार्य हैं।**

Dr. Hem Raj Sharma

Specialist in Kshar Sutra Therapy
(Piles, Fistula, Anal Polyps, Prolapse Rectum, Pilonidal Sinus)

Formerly Incharge Medical Officer,
DAH Una, Govt. of Himachal Pradesh

NATIONAL CHIKITSAK GURU

RAV (National Academy of Ayurved) New Delhi
Under Ministry of Health & Family Welfare, Deptt. of Ayush, Govt. of India.

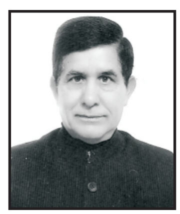

B.Sc. HPU Shimla, GAMS, MD, University Rohtak, PGD Health & Family welfare, Punjab Uni. Chandigarh CC. Yog & Naturalpathy, Gujrat University, Jamnagar, CRAV Kshar-Sutra Specialisation, New Delhi

"सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वेसन्तु निरामयाः"

JAGAT HOSPITAL
&
Kshar Sutra Centre

Near Govt. College, Nangal Road, Una (H.P.)
Pin : 174303
94184-88660, 88940-68358, 94593-88323

प्रश्नोत्तरी के उत्तर

1. शिमला, 2. लाहौल, 3. 5 जून, 4. मुंबई, 5. चन्द्रमा, सूर्य और पृथ्वी के बीच आने पर, 6. ऑटोमेटेड टेलर मशीन, 7. 20, 8. कोकून, 9. ललिता कुमारमंगलम, 10. स्पेस की

अन्याय या न्याय

दो लड़के बाग में खेल रहे थे, तभी उन्होंने एक पेड़ पर जामुन लगे देखे। उनके मुंह में पानी भर आया। वे जामुन खाना चाहते थे लेकिन पेड़ बहुत ऊंचा था। अब कैसे खाएं जामुन? समस्या बड़ी विकट थी।

एक लड़का बोला-''कभी-कभी प्रकृति भी अन्याय करती है। अब देखो, जामुन जैसा छोटा-सा फल इतनी ऊंचाई पर इतने बड़े पेड़ पर लगता है और बड़े-बड़े खरबूजे बेल से लटके जमीन पर पड़े रहते हैं।''

दूसरे लड़के ने भी सहमति जताई। वह बोला-''तुम ठीक कहते हो, तुम्हारी बात में दम है लेकिन मेरी समझ में यह बात नहीं आई कि प्रकृति ने छोटे-बड़े के अनुपात का ध्यान क्यों नहीं रखा। अब यह भी कोई तुक हुई कि इतना छोटा-सा फल तोड़ने के लिए इतने ऊंचे पेड़ पर चढ़ना पड़े। मेरा तो मानना है कि प्रकृति भी संपूर्ण नहीं।''

तभी अचानक ऊपर से जामुन का एक गुच्छा एक लड़के के सिर पर आ गिरा। उसने ऊपर की ओर देखा लेकिन कुछ बोला नहीं।

तभी दूसरा लड़का बोला-''मित्र ! अभी हम प्रकृति की आलोचना कर रहे थे और प्रकृति ने ही हमें सबक सिखा दिया। सोचो जरा, यदि जामुन के बजाए तरबूज गिरा होता तो क्या होता? शायद तुम्हारा सिर फट जाता और शायद फिर बच भी न पाते।''

''हां, प्रकृति जो भी करती है अच्छा ही करती है।'' वह लड़का बोला जिसके सिर पर जामुन का गुच्छा गिरा था।❖

साभार : बाल कहानियां

अवज्ञा का परिणाम

कौवे के रंग के बारे में एक पुरानी किवदंती है। एक ऋषि ने कौए को अमृत खोजने भेजा, लेकिन उन्होंने यह इत्तला भी दी कि सिर्फ अमृत की जानकारी ही लेना है, उसे पीना नहीं है। एक बरस के परिश्रम के पश्चात सफेद कौए को अमृत की जानकारी मिली, पीने की लालसा कौआ रोक नहीं पाया एवं अमृत पी लिया। ऋषि को आकर सारी जानकारी दी।

इस पर ऋषि आवेश में आ गए और श्राप दिया कि तुमने मेरे वचन को भंग कर अपवित्र चोंच द्वारा पवित्र अमृत को भ्रष्ट किया है। इसलिए प्राणी मात्र में तुम्हें घृणास्पद पक्षी माना जाएगा एवं अशुभ पक्षी की तरह मानव जाति हमेशा तुम्हारी निंदा करेगी, लेकिन चूंकि तुमने अमृत पान किया है, इसलिए तुम्हारी स्वाभाविक मृत्यु कभी नहीं होगी। कोई बीमारी भी नहीं होगी एवं वृद्धावस्था भी नहीं आएगी।

भाद्रपद के महीने के 16 दिन तुम्हें पितरों का प्रतीक समझ कर आदर दिया जाएगा एवं तुम्हारी मृत्यु आकस्मिक रूप से ही होगी।

इतना बोलकर ऋषि ने अपने कमंडल के काले पानी में उसे डूबो दिया। काले रंग का बनकर कौआ उड़ गया तभी से कौए काले हो गए।

साभार : बाल कहानियां

प्रश्नोत्तरी

1. भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान कहां स्थित है?
2. प्रसिद्ध तांदी संगम कहां पर स्थित है
3. विश्व पर्यावरण दिवस कब मनाया जाता है?
4. छत्रपति शिवाजी ट्रमिनल किस हवाई अड्डे का नाम है?
5. सूर्य ग्रहण कब होता है?
6- ATM का अर्थ क्या है?
7. मनुष्य के कितने दांतों को दूध के दांत कहते हैं?
8. रेशम के कीड़े से किस अवस्था में रेशम प्राप्त होती है?
9. भारतीय महिला आयोग की वर्तमान अध्यक्षा कौन हैं?
10. कम्प्यूटर के की-बोर्ड़ की कौन सी की पर उसका नाम नहीं होता है?

सबसे बड़ा रेडियो टेलीस्कोप

आइए जानते हैं चीन में तैयार दुनिया के सबसे बड़े रेडियो टेलिस्कोप के बारे में

* चीन ने हाल में दुनिया का सबसे बड़ा रेडियो टेलिस्कोप तैयार किया है। इसका व्यास आधा किलोमीटर का है।
* इसका नाम ही रखा गया है 'फाइव हंड्रेड मीटर अपर्चर स्फेरिकल टेलिस्कोप' यानी फास्ट।
* इसमें 4,450 पैनल लगे हुए हैं और निर्माण में 18 करोड़ डॉलर (करीब 1200 करोड़ रूपए) की लागत आई है।
* यह रेडियो टेलीस्कोप इस साल सितंबर से शुरू होगा।
* कुछ मीडिया खबरों के अनुसार चीन के इस टेलिस्कोप के माध्यम से दूसरे ग्रहों के किसी संभावित प्राणियों पर भी नजर रखी जाएगी, यानी दूसरे ग्रह पर जीवन की संभावनाओं की तालाश की जाएगी।
* इसके पहले दुनिया में सबसे बड़ा रेडियो टेलिस्कोप पोर्टो रिको में स्थापित 300 मीटर व्यास का अरेसिबो ऑब्जर्वेटरी का था।
* चीन के गुइझुओ प्रांत के एक ग्रामीण इलाके में स्थापित फास्ट से पुच्छल तारों, क्वासर्स, न्यूट्रल हाइड्रोजन आदि पर नजर रखी जाएगी।

चुटकुले

1. वर्कशॉप का मालिक, 'तुम्हें पता है ये मशीन कैसे शुरू होती है?'
   नया मैकेनिक, 'घरररररररररररररर.....
   'मालिक, 'और बंद कैसे होती है?'
   मैकेनिक, 'धुप..धुप...धुप..धुप...धुपप...'
2. 'एक व्यक्ति ने एक बच्चे से पूछा, 'आपके पापा का क्या नाम है?'
   बच्चे ने जवाब दिया, 'अभी नाम नहीं रखा है, बस प्यार से पापा... पापा कहते हैं।'
3. डॉक्टर, 'अगर मरीज को एक घंटा पहले ले जाते तो हम उसे बचा सकते थे, लेकिन अब कुछ नहीं हो सकता।'
   घायल को अस्पताल लाने वाला, 'लेकिन डॉक्टर साहब, एक्सीडेंट तो अभी आधे घंटे पहले हुआ था।'

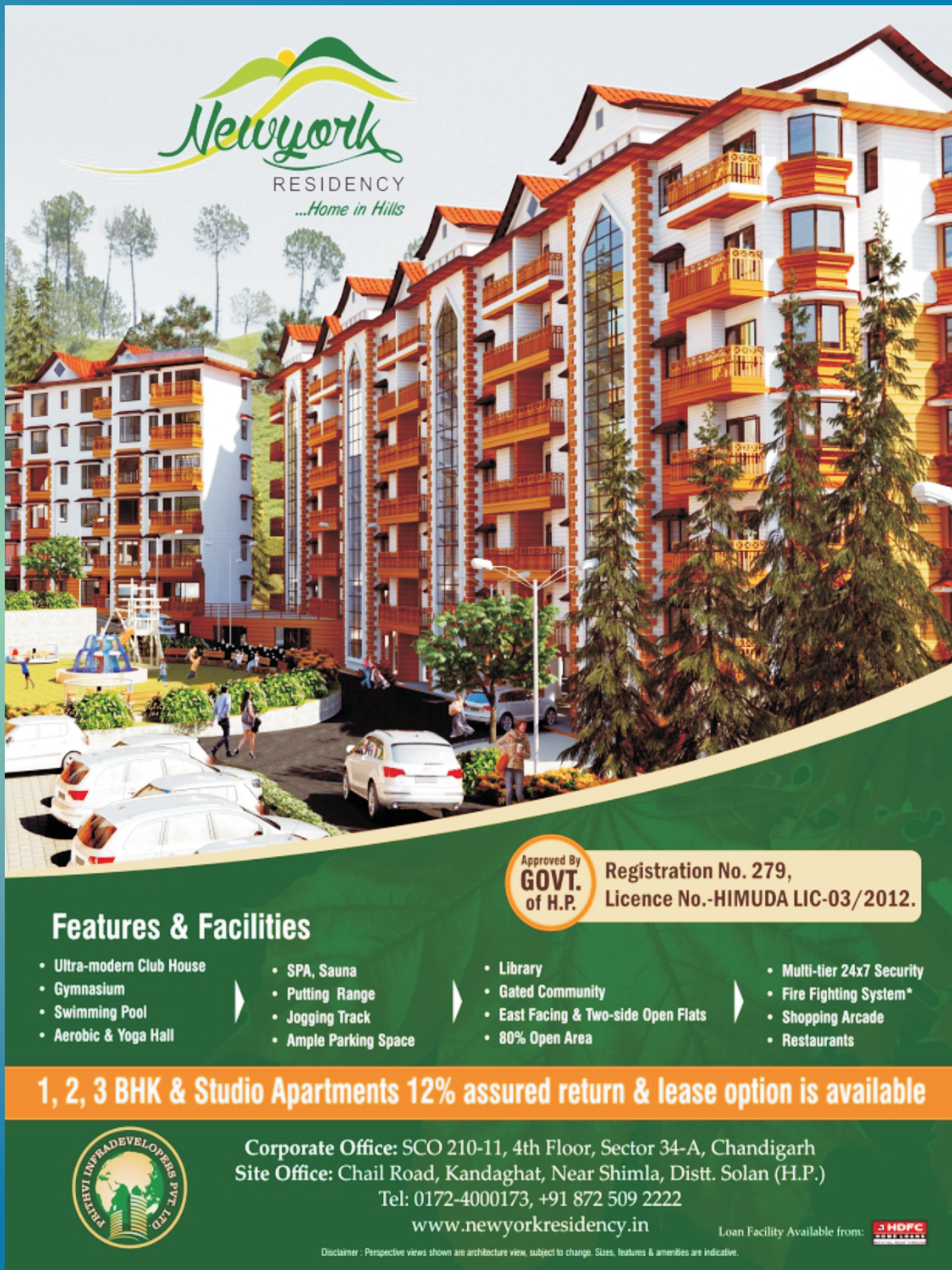
Newyork
RESIDENCY
...Home in Hills
Approved By GOVT. of H.P.
Registration No. 279,
Licence No.-HIMUDA LIC-03/2012.
Features & Facilities
• Ultra-modern Club House
• Gymnasium
• Swimming Pool
• Aerobic & Yoga Hall
• SPA, Sauna
• Putting Range
• Jogging Track
• Ample Parking Space
• Library
• Gated Community
• East Facing & Two-side Open Flats
• 80% Open Area
• Multi-tier 24x7 Security
• Fire Fighting System*
• Shopping Arcade
• Restaurants
1, 2, 3 BHK & Studio Apartments 12% assured return & lease option is available
PRITHVI INFRADEVELOPERS PVT. LTD.
Corporate Office: SCO 210-11, 4th Floor, Sector 34-A, Chandigarh
Site Office: Chail Road, Kandaghat, Near Shimla, Distt. Solan (H.P.)
Tel: 0172-4000173, +91 872 509 2222
www.newyorkresidency.in
Loan Facility Available from: HDFC
Disclaimer : Perspective views shown are architecture view, subject to change. Sizes, features & amenities are indicative.

HP/48/SML (upto 31-12-2017) Pre Paid RNI No. HPHIN/2001/04280

HIM AGRO FOOD CORPORATION
Global Solution Provider For Agro Food Industry

BRINGING TOGETHER
THE MAKER & THE TAKER

New age Technology that connects the Farmer and the Consumer; serving India from the farm to the fork.

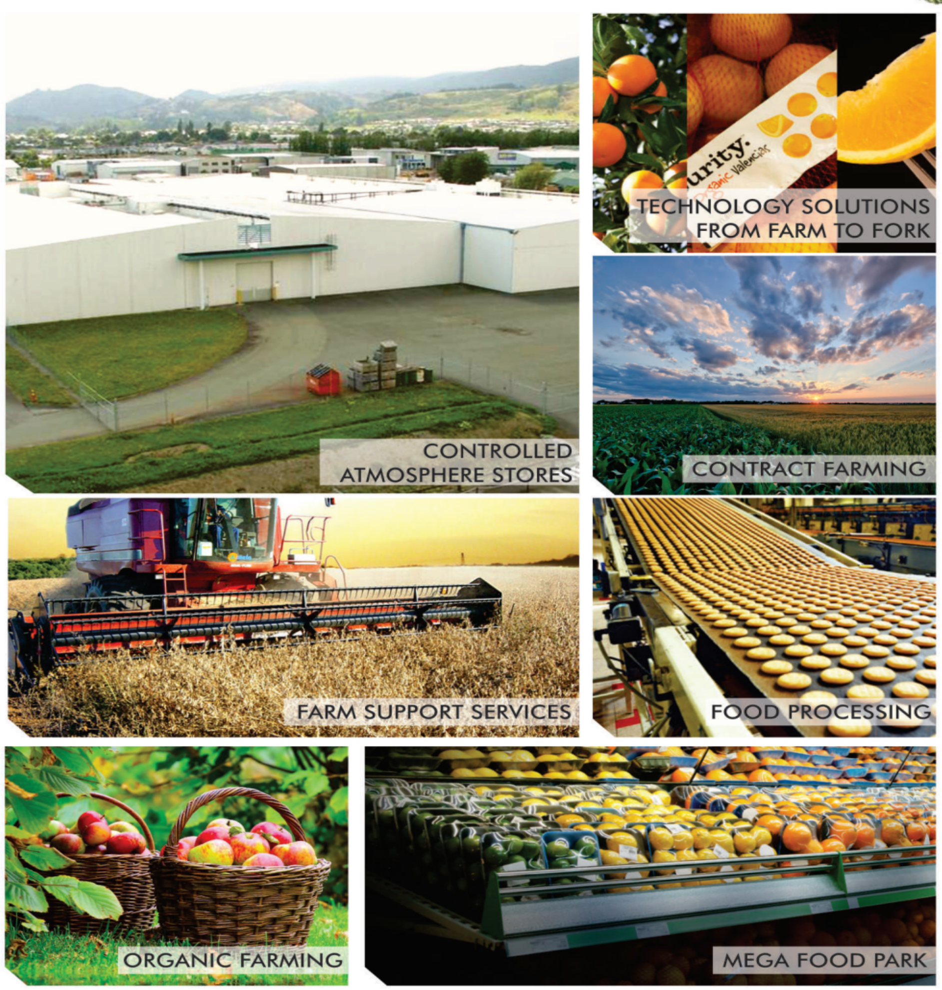

Season's Greetings

HIM AGRO FOOD CORPORATION, SCO 118-119-120, 4th FLOOR, SECTOR 34-A, CHANDIGARH-160022, PHONE: +91 172 4989999, www.hafcoindia.com

Designed by : New Era Graphics, Shimla Ph. : 2628276

मातृवन्दना

प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, प्लॉट 820, फेस - 2, उद्योग क्षेत्र चंडीगढ़ से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा, शिमला - 171004, से प्रकाशित।